



सूर्यसूता

सितंबर 2026

पैंतीसवां अंक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), दिल्ली

नई दिल्ली - 110002

सरस्वती वंदना

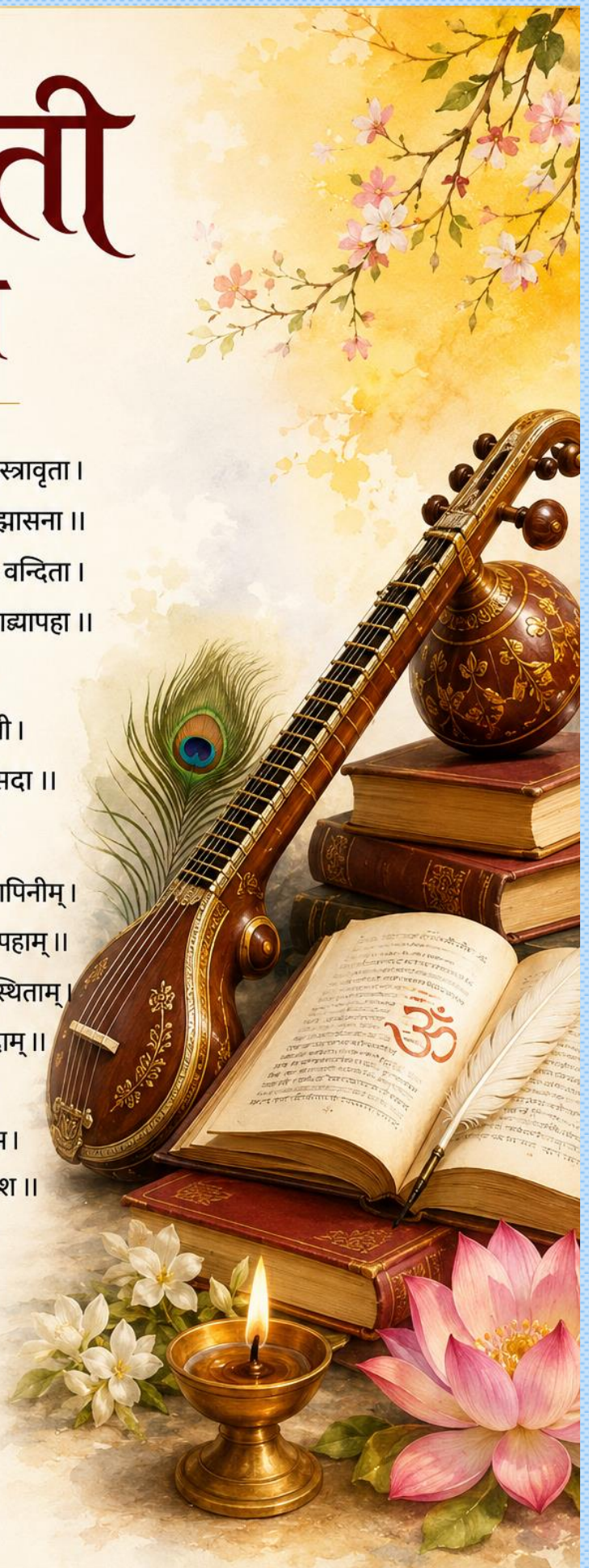
या कुन्देन्दु तुषारहार धवला, या शुभ्रवस्त्रावृता ।
या वीणावरदंडमण्डितकरा, या श्वेतपद्मासना ॥
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्दैवैः सदा वन्दिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणी ।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमामाधां जगद्व्यापिनीम् ।
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यन्धकारापहाम् ॥
हस्ते स्फटिकमालिकां विदग्धां पद्मासन संस्थिताम् ।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवती बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

वीणा पुस्तक धारिणी, श्वेत कमल पर आस ।
हंस वाहिनी माँ सरस्वती, दे हमें ज्ञान प्रकाश ॥

हे माँ शारदे! ज्ञान की ज्योति जगाओ,
अज्ञान तम को दूर भगाओ ।
बुद्धि, विद्या, विनय दो हमको,
सत्यपथ पर सदा चलाओ ॥



पत्रिका परिवार

- मुख्य संरक्षक : श्रीमती नाज़ली जे. शाईन
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), दिल्ली
- संरक्षक : श्री मानस बाजपेई
व. उप महालेखाकार (प्रशासन एवं राजभाषा)
- संपादक : श्रीमती मंजू मल्हौत्रा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
- संपादन सहयोग : समस्त राजभाषा परिवार
- अंक : पैंतीसवां

नोट: इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं तथा संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचना की मौलिकता तथा अन्य किसी विवाद के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार होंगे।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), दिल्ली

नई दिल्ली - 110002



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि विविध रचनाओं से सुसज्जित हिंदी गृह पत्रिका 'सूर्यसुता' के 35वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हमारी पत्रिका का प्रत्येक अंक हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उत्थान की ओर हमारा एक सुदृढ़ कदम है। राजभाषा हिंदी के प्रति एक सकारात्मक माहौल तथा कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभाओं को एक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से 'सूर्यसुता' का प्रकाशन आरंभ किया गया था और इस उद्देश्य की पूर्ति में हम निरंतर सफल हो रहे हैं।

हमारा कार्यालय राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए निरंतर कार्यशील है एवं पूर्णतः कटिबद्ध है और यह हम सब के लिए बेहद गर्व का विषय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'सूर्यसुता' पत्रिका हमारे पाठकों को राजभाषा से जोड़ते हुए सभी कार्य राजभाषा हिंदी में करने के लिए प्रेरित करती रहेगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(नाज़ली जे. शाईन)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) दिल्ली



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सूर्यसुता' के 35वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। 'सूर्यसुता' की विभिन्न रचनाएँ कृतिकारों द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर उनकी सृजनात्मक शक्ति को बढ़ावा देती हैं। पत्रिका के माध्यम से विभाग के कर्मिकों को अपने भावों को अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त हुआ है। पत्रिका में प्रकाशित बहुमूल्य रचनाएँ मूलतः हिंदी के प्रति सम्मान एवं प्रेम को साकार रूप से अभिव्यक्ति का एक सुंदर मंच प्रदान करती हैं एवं अधिकाधिक हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं।

पत्रिका के प्रकाशन से वह सभी कर्मचारी तथा अधिकारी बधाई के पात्र हैं जिन्होंने अपनी मूल्यवान रचनाओं के माध्यम से 'सूर्यसुता' को समृद्ध किया है। भविष्य में भी सभी से इस पत्रिका के संवर्धन के लिए इसी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा रहेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

मानस

(मानस बाजपेई)

व. उप महालेखाकार (प्रशासन/राजभाषा)



संपादकीय

कार्यालय की हिंदी पत्रिका “सूर्यसुता” के 35वें अंक का प्रकाशन हम सभी के लिए हर्षोल्लास का दिन है। अनुभवों से प्राप्त व्यवहारिक ज्ञान को आमोद के परिधान से अलंकृत कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना श्रेष्ठतर कलात्मक कौशल का प्रमाण है। यह पत्रिका कार्यालय हिंदी भाषा के प्रचार-प्रचार के साथ-साथ कार्यालय के कार्यों में हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग के लिए कार्मिकों को उत्साहित करने की दिशा में प्रयासरत है।

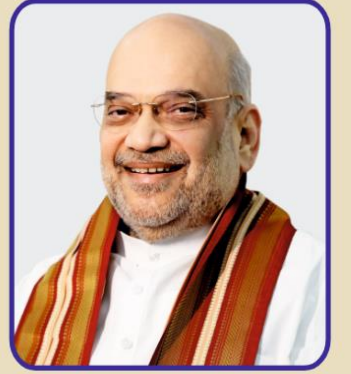
उन सभी कृतिकारों को धन्यवाद जिनके सहयोग के बिना इस पत्रिका का प्रकाशन संभव नहीं हो पाता। सुधी पाठकों से निवेदन है कि आप अपने बेशकीमती सुझावों से हमें अवगत कराने का कष्ट करें ताकि पत्रिका के भावी अंकों को और समृद्ध किया जा सके। साथ ही साथ ‘सूर्यसुता’ के पूर्व अंक के लिए समालोचकों एवं शुभचिंतकों द्वारा प्रदत्त रचनात्मक प्रतिक्रियाओं के लिए अत्यधिक आभार।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(मंजू मल्हौत्रा)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा अनुभाग)

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो,

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ!

भाषा चंदन की उस सुगंध के समान है, जो हमारी संस्कृति, संस्कार, ज्ञान, परंपरा और राष्ट्रीय चेतना की जीवंत धारा बन जाती है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में हमारी भाषाएँ, उपभाषाएँ और बोलियाँ हमारी सभ्यता की स्मृति, लोकजीवन की संवेदना और राष्ट्रीय एकता की आधारशिला हैं। स्वभाषा व्यक्ति को अपनी जड़ों से जोड़ती है और उसे आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों, अनुभवों और आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने की शक्ति देती है।

हमारा भारत भाषाई विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि की अनुपम भूमि है। यहाँ प्रत्येक भाषा अपने साथ एक इतिहास, लोकपरंपरा और जीवन-दृष्टि लेकर चलती है। यही भाषाई बहुलता भारत की 'विविधता में एकता' की भावना को सशक्त बनाती है। हिंदी ने इसी विविधता के बीच संवाद, संपर्क और समन्वय की भाषा के रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों, वर्गों और समुदायों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी का विकास भी तभी सार्थक है, जब वह सभी भारतीय भाषाओं के सम्मान, संरक्षण और संवर्धन के साथ आगे बढ़े। हिंदी किसी भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि भारतीय भाषाओं के बीच आत्मीय संवाद और राष्ट्रीय एकात्मता की महत्वपूर्ण कड़ी है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने भाषा की वास्तविक शक्ति को जनता के जीवन और उसके सहज प्रयोग से जोड़ा था। उनका यह भाव हमें स्मरण कराता है कि कोई भी भाषा तभी जीवंत बनती है, जब वह समाज के सामान्य जन के श्रम, संवेदना, आकांक्षा और आत्मविश्वास की भाषा बने। हिंदी की शक्ति भी इसी लोक-संपर्क, सरलता, सहजता और व्यापक स्वीकार्यता में निहित है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान **स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा** के विचारों ने राष्ट्रीय चेतना को नई ऊर्जा दी। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने यह अनुभव किया था कि स्वभाषा और स्वाभिमान के बिना स्वराज की संकल्पना अधूरी रहेगी। हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं ने जन-जागरण, राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के विचार को जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी ने देश के अनेक हिस्सों में स्वतंत्रता आंदोलन के विचारों, संदेशों और संकल्पों को सामान्य जन तक पहुँचाने की सशक्त संपर्क भाषा के रूप में कार्य किया।

यह वर्ष राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' के 150 वर्षों के स्मरण का भी विशेष अवसर है। आज जब देश 'विकसित भारत@2047' के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तब 'वंदे मातरम' का भाव हमें यह प्रेरणा देता है कि विकास की यात्रा अपनी विरासत, अपनी भाषाओं, अपनी स्वभाषा और अपने सांस्कृतिक आत्मविश्वास के साथ ही सार्थक होती है।

14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक यात्रा का महत्वपूर्ण क्षण था। यह निर्णय शासन को जनसामान्य के अधिक निकट लाने, लोक-संवाद को सशक्त करने और भारतीय भाषाओं के प्रति राष्ट्रीय सम्मान को अभिव्यक्त करने का प्रतीक था। हिंदी दिवस हमें इसी ऐतिहासिक संकल्प का स्मरण कराता है और राजभाषा हिंदी को जनसेवा, सुशासन और राष्ट्रीय संवाद का प्रभावी माध्यम बनाने की प्रेरणा देता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में अमृतकाल का वर्तमान दौर भारत की सांस्कृतिक विरासत, सभ्यतागत आत्मविश्वास और आधुनिक प्रगति के अद्भुत समन्वय का कालखंड है। प्रधानमंत्री जी का 'विकास भी, विरासत भी' का मंत्र हमें यह दिशा देता है कि आधुनिक भारत का निर्माण अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए ही सशक्त रूप से किया जा सकता है। गुलामी की मानसिकता से मुक्ति का अर्थ यह भी है कि हम अपनी भाषाओं में सोचने, काम करने, सृजन करने और विश्व से संवाद करने का आत्मविश्वास विकसित करें। इस दिशा में राजभाषा हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

इसी दृष्टि से राजभाषा विभाग द्वारा तकनीकी और संस्थागत स्तर पर अनेक महत्वपूर्ण पहलें की गई हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित 'भारती'; भारतीय भाषाओं के बीच संवाद को सहज बनाने की दिशा में एक दूरदर्शी प्रयास है। वर्ष 2024 में स्थापित 'भारतीय भाषा अनुभाग' केंद्र और राज्यों के बीच पत्राचार तथा प्रशासनिक संवाद को भारतीय भाषाओं में अधिक सुगम बना रहा है। इसी प्रकार, 8.27 लाख से अधिक प्रविष्टियों वाला 'हिंदी शब्द सिंधु' डिजिटल शब्दकोश हिंदी सहित भारतीय भाषाओं की शब्द-संपदा को जोड़ते हुए ज्ञान-साझाकरण का समृद्ध माध्यम बन रहा है। ये पहलें हिंदी को तकनीक, प्रशासन और ज्ञान-विनिमय की आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप और अधिक सक्षम बना रही हैं।

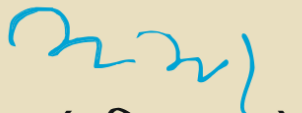
हिंदी दिवस केवल भाषा के प्रति गौरव व्यक्त करने का अवसर नहीं, बल्कि स्वभाषा में अपना कार्य, चिंतन और सृजन करने के लिए संकल्पित होने तथा संविधान-निर्माताओं के प्रति कृतज्ञ श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर भी है। आइए, इस पावन अवसर पर हम हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं को विकसित, आत्मनिर्भर और सशक्त भारत की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम बनाने का संकल्प लें।

आप सभी को पुनः हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

वंदे मातरम!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2026


(अमित शाह)

E-mail: agawesthengsi2@eng.nyu.edu

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	ध्यान (Meditation): अंतर्मन की ओर लौटती एक यात्रा	श्रीमती टीना आनंद गिरधर, डी.ई.ओ.	1
2.	ऑडिट: सत्य का दर्पण	श्री आशीष सिंह, व. उपमहालेखाकार	5
3.	बदलते समय में मानवीय संवेदनाओं का महत्व	श्री रोहित तोमर, ले.प.	6
4.	चार धाम यात्रा "एक सुखद अनुभव"	श्री शैलेन्द्र शर्मा, स.ले.प.अ.	8
5.	सहनशक्ति	श्रीमती नेहा तिवारी, क.अ.अधिकारी	14
6.	क्या है ज़िंदगी	श्री गुरप्रीत सिंह गांधी, व.ले.प.अ.	15
7.	माता-पिता के संस्कार	श्री वेद प्रकाश खत्री, व.ले.प.	16
8.	नादान	श्री भूपेंद्र भंडोरिया, स.ले.प.अ.	18
9.	बुढ़ी माँ का इंतजार और आँगन में बची हुई धूप	श्री रोहित तोमर, ले.प.	19
10.	रक्षा बंधन	श्रीमती मंजू मल्हौत्रा, व.ले.प.अ.	21
11.	कार्यालय का अविस्मरणीय दिन	श्री भूपेन्द्र सिंह सिरोही, ले.प.	22
12.	जेनरेशन जेड (Gen Z)	श्रीमती टीना आनंद गिरधर, डी.ई.ओ.	23
13.	एक बरसाती दिन की सीख	श्री नीरज कुमार, ले.प.	24
14.	किसान-मिट्टी-पैसे	श्री हिमांशु सतोरिया, स.ले.प.अ.	25
15.	विवाह: समाज की आधारशिला – चुनौतियां और समाधान	श्री भूपेंद्र मीणा, स.ले.प.अ.	26
16.	माँ का भेदभाव	श्रीमती नेहा तिवारी, क.अ.अधिकारी	28
17.	प्रभु तेरी आस	श्री गुरप्रीत सिंह गांधी, व.ले.प.अ.	31
18.	तारा और सितारा: जी.डी. सेक्शन की असली पहचान	श्री नीरज कुमार, ले.प.	32
19.	क्यों चिंता करें मन मेरे, क्यों चिंता तुझे सताए	श्रीमती मंजू मल्हौत्रा, व.ले.प.अ.	34
20.	दीप बनें	श्री नीरज कुमार, ले.प.	35

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
21.	सच्ची कमाई	श्री भूपेन्द्र सिंह सिरोही, ले.प.	36
22.	मौन नहीं, अब शब्द कहेंगे	श्री कुमार अनुकूल, स.ले.प.अ.	37
23.	रात, दिन और वो	श्री श्री नागेश, व.ले.प.अ.	38
24.	ईश्वर का दूसरा रूप	श्री भूपेन्द्र मीणा, स.ले.प.अ.	40
25.	नारी: अबला या सबला	श्री ध्रुव रंगा, एम.टी.एस.	42
26.	जिंदगी	श्री वेद प्रकाश खत्री, व.ले.प.	46
27.	परम संतोष	श्री वेद प्रकाश खत्री, व.ले.प.	47
28.	हिंदी: आत्मा की आवाज़	श्री रोहित तोमर, ले.प.	49
29.	माँ	श्री भूपेन्द्र भंडोरिया, स.ले.प.अ.	50
30.	लेखापरीक्षकों के लिए योग और ध्यान	श्री राकेश, व.ले.प.	51
31.	रंगमंच	श्री बिपलब कुमार साहू, व.ले.प.अ.	52
32.	त्योहारों का मिलन	श्रीमती नेहा तिवारी, क.अ.अ.	53
33.	भारत देश का प्यारा झंडा, ऊँचा सदा रहेगा ऊँचा सदा रहेगा झंडा, ऊँचा सदा रहेगा।	श्रीमती मंजू मल्हौत्रा, व.ले.प.अ.	55

सामग्री

क्र.सं.	कार्यालय सामग्री	पृष्ठ सं.
1.	सेवानिवृत्ति	56
2.	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2026-27 का वार्षिक कार्यक्रम	57

ध्यान (Meditation): अंतर्मन की ओर लौटती एक यात्रा

मनुष्य ने बाहर की दुनिया को जानने में सदियां लगा दीं। उसने समुद्र की गहराइयां नापीं, पर्वतों की चोटियां छुईं और अंतरिक्ष की सीमाओं तक पहुँचने का प्रयास किया। प्रकृति के अनगिनत रहस्यों को समझ लेने के बाद भी एक रहस्य उसके सामने आज तक बना हुआ है- स्वयं का। शायद ध्यान उसी अनजाने प्रदेश की ओर जाने वाली सबसे शांत यात्रा है।

आज मनुष्य के पास सुविधाओं की कमी नहीं, फिर भी उसके भीतर एक अनकही बेचैनी है। सुबह आँख खुलते ही मोबाइल की चमकती स्क्रीन, संदेशों की आहट, रोज़ के काम और भविष्य की चिंताएं दिन को घेर लेती हैं। रात आती है तो शरीर थक चुका होता है, पर मन अब भी जागता रहता है। बाहरी संसार जितना तेज हुआ है, भीतर का मौन उतना ही दुर्लभ होता गया है। ऐसे समय में ध्यान स्वयं की ओर लौटने का निमंत्रण है।



ध्यान का अर्थ केवल आंखें बंद करके बैठ जाना नहीं। यह अपने भीतर उठते विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं को बिना उनसे उलझे देखने की कला है। इसके लिए किसी विशेष स्थान या साधन की आवश्यकता नहीं। शांत होकर बैठना, साँसों की गति को महसूस करना और मन के भटकने पर उसे सहजता से वर्तमान में लौटा लाना - यहीं से ध्यान की शुरुआत होती है।

साँस इस यात्रा की सबसे सरल साथी है। हम हर क्षण साँस लेते हैं, पर सामान्यतः उसके अस्तित्व से अनजान रहते हैं। जब ध्यानपूर्वक साँस को महसूस करते हैं, तो जीवन की वह सहज लय दिखाई देने लगती है जो हमेशा हमारे भीतर चलती रही है।

मान लीजिए कार्यालय में किसी सहकर्मी से विवाद हो गया। बातचीत कुछ मिनटों में समाप्त हो गई, लेकिन मन उस घटना को घंटों दोहराता रहा - “मुझे ऐसा कहना चाहिए था”, “उसने ऐसा क्यों कहा?” घटना बाहर समाप्त हो चुकी है, पर भीतर चलती रहती है। ध्यान हमें इस अंतर को पहचानने में सहायता करता है। जब यह समझ आता है कि हम घटना को नहीं,

बल्कि उसकी स्मृति और अपनी प्रतिक्रिया को ढो रहे हैं, तब उस बोझ से मुक्त होने की संभावना पैदा होती है।

यही सजगता हमें वर्तमान से जोड़ती है। मन अक्सर अतीत के पछतावे और भविष्य की आशंकाओं के बीच भटकता रहता है। अतीत लौटकर नहीं आता और भविष्य अभी आया नहीं है; हमारे पास केवल वर्तमान है।

एक विद्यार्थी परीक्षा से पहले यदि लगातार असफलता की कल्पना करता रहे, तो भय उसकी तैयारी को कमजोर कर सकता है। कुछ क्षण शांत होकर साँसों पर ध्यान देना उसे उस आशंका से हटाकर सामने रखी पुस्तक तक लौटने में मदद कर सकता है। ध्यान परिस्थितियों को बदलने से पहले उनके प्रति हमारी प्रतिक्रिया को सँवारता है।

जीवन में बहुत कुछ ऐसा है जिसे हम नियंत्रित नहीं कर सकते। मौसम, बीती हुई घटनाएँ और दूसरे लोगों के विचार हमारे अधिकार में नहीं हैं। लेकिन अपना व्यवहार, अपने कर्म और अपनी प्रतिक्रिया हमारे हाथ में हैं। इस अंतर को समझ लेना मानसिक परिपक्वता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इसी से जुड़ा है स्वीकार का भाव। स्वीकार करना हार मानना नहीं है; यह वास्तविकता को पहचानकर अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगाना है। नदी मार्ग में आने वाली चट्टान को देखकर रुक नहीं जाती। वह अपना रास्ता बदलती है, पर अपनी यात्रा नहीं छोड़ती। जीवन भी हमसे अक्सर यही लचीलापन माँगता है।

ध्यान हमें दूसरों के प्रति ही नहीं, अपने प्रति भी करुणाशील बनाता है। हम अपनी छोटी-सी भूल को जीवन भर का अपराध बना लेते हैं और एक असफलता को अपनी पहचान। जबकि गलती जीवन का एक अध्याय हो सकती है, पूरी पुस्तक नहीं। स्वयं को समझने वाला व्यक्ति अपनी कमियों को स्वीकार कर उनसे सीखने की क्षमता विकसित करता है।

ध्यान का प्रभाव मानसिक अनुभवों तक सीमित नहीं माना जाता। शांत बैठकर सजग साँसों का अभ्यास तनाव से निपटने में सहायक हो सकता है और कुछ लोगों को एकाग्रता तथा नींद में भी लाभ अनुभव होता है। यह किसी रोग का उपचार नहीं है, लेकिन संतुलित जीवनशैली के साथ मन को स्थिर रखने का उपयोगी साधन हो सकता है।

बच्चों के लिए भी ध्यान एक सहज आदत बन सकता है। कुछ मिनट शांत बैठना, साँसों को महसूस करना, प्रकृति को ध्यान से देखना या थोड़ी देर स्क्रीन से दूर रहना उन्हें अपनी भावनाओं और ध्यान की क्षमता के प्रति सजग बना सकता है। आज जब उनका मन लगातार

बदलती सूचनाओं से घिरा रहता है, कुछ क्षणों का मौन उनके लिए किसी विश्रामस्थल की तरह हो सकता है।

ध्यान के लिए किसी भव्य आश्रम या एकांत पर्वत की आवश्यकता नहीं। घर की बालकनी में बैठकर उगते सूरज को देखना, पेड़ों की पत्तियों की सरसराहट सुनना या कुछ देर अपनी साँसों के साथ रहना भी ध्यान का अनुभव दे सकता है। जब देखने वाला पूरी तरह उस क्षण में उपस्थित हो जाता है, तब साधारण दृश्य भी असाधारण गहराई प्राप्त कर लेता है।

प्रकृति ध्यान की भाषा सहज ही समझाती है। वृक्ष आँधी में झुकता है, पर जड़ों से जुड़ा रहता है। नदी बाधाओं के बीच रास्ता खोजती है। आकाश में बादल आते-जाते हैं, पर आकाश अपनी विशालता नहीं खोता। मन भी ऐसा हो सकता है - भावनाएँ उठें, विचार आएँ, परिस्थितियाँ बदलें, फिर भी भीतर एक आधार बना रहे।



ध्यान उसी आंतरिक आधार को पहचानने का अभ्यास है।

इसका अर्थ संसार से पलायन नहीं, बल्कि संसार के बीच अधिक जागरूक होकर जीना है। ध्यान करने वाला व्यक्ति समस्याओं से मुक्त नहीं होता; वह उनके सामने अपनी उपस्थिति को अधिक स्पष्ट कर सकता है। वही परिस्थिति, जो अशांत मन को संकट दिखाई देती है, शांत मन को एक चुनौती या सीख के रूप में दिखाई दे सकती है।

ध्यान की शुरुआत के लिए लंबी साधना आवश्यक नहीं। पाँच-दस मिनट का नियमित अभ्यास भी पर्याप्त हो सकता है। शरीर को सहज रखकर बैठें, आँखें बंद करें और साँसों को महसूस करें।

उन्हें बदलने की कोशिश न करें। मन भटके तो स्वयं को दोष न दें; ध्यान को धीरे से वापस ले आएँ। यह लौटना ही अभ्यास है।

किसी दिन मन शांत मिलेगा, किसी दिन विचारों से भरा हुआ। दोनों स्थितियाँ स्वाभाविक हैं। ध्यान में सफलता का अर्थ विचारों का समाप्त हो जाना नहीं, बल्कि विचारों के बीच अपनी सजगता बनाए रखना है।

आज की दुनिया हमें लगातार तेज चलने के लिए कहती है। अधिक काम, अधिक उपलब्धि, अधिक जानकारी और अधिक गति—मानो जीवन का मूल्य केवल आगे बढ़ते रहने में हो। ध्यान इस दौड़ के बीच एक विराम है। ऐसा विराम, जिसमें हम पहली बार स्वयं से पूछ सकते हैं - मैं कहाँ जा रहा हूँ और क्यों?

शायद इसी प्रश्न से ध्यान की वास्तविक यात्रा आरंभ होती है।

अंततः ध्यान कोई रहस्यमय साधना मात्र नहीं, बल्कि स्वयं से किया गया एक शांत संवाद है। यह हमें जीवन से दूर नहीं करता, बल्कि जीवन को अधिक गहराई से देखने की दृष्टि देता है। बाहरी परिस्थितियाँ हमेशा हमारे अनुकूल हों, यह संभव नहीं; लेकिन उनके बीच हमारा मन कैसा रहे, इस दिशा में हम काम कर सकते हैं।

ध्यान आँखें बंद करने की प्रक्रिया भर नहीं; यह भीतर की आँख खोलने की यात्रा है।

जब बाहरी शोर कुछ क्षणों के लिए पीछे छूटता है, तब भीतर का एक सूक्ष्म स्वर सुनाई देने लगता है। वहाँ न अतीत का पछतावा उतना भारी होता है, न भविष्य की चिंता उतनी तीखी। वहाँ केवल यह क्षण होता है - साँस का आना, साँस का जाना और जीवन का अपने सहज प्रवाह में घटित होना।

शायद ध्यान का सबसे बड़ा उपहार यही है कि वह हमें किसी नई जगह नहीं ले जाता; वह हमें वहीं वापस लाता है जहाँ हम हमेशा से थे - अपने भीतर।

और जब मनुष्य स्वयं से मिल लेता है, तब बाहरी संसार को देखने की उसकी दृष्टि भी बदल जाती है।



श्रीमती टीना आनंद गिरधर, डी.ई.ओ.

ऑडिट: सत्य का दर्पण



संख्याओं की भाषा, दस्तावेजों की पुकार,
ऑडिट है सच्चाई का निर्मल आधार।
राजकोष के हर कण का रखता हिसाब,
न्याय, व्यवस्था, विश्वास का देता जवाब।
जहाँ आँकड़े बोलते हैं, कागज़ गवाही देते हैं,
ऑडिट वहाँ प्रश्न पूछता, छिपे सत्य जगा देते हैं।
यह केवल त्रुटि नहीं, सुधार का संदेश है,
हर चूक के पीछे बेहतर भविष्य का प्रवेश है।
लोकधन का प्रहरी है, पारदर्शिता का गीत,
ईमानदारी से गढ़ता है शासन की प्रीत।
कभी प्रश्न, कभी उत्तर, कभी आँकड़ों का मंथन,
ऑडिट है सुशासन का अमृत, सत्य का दर्पण।



श्री आशीष सिंह, उप-महालेखाकार

बदलते समय में मानवीय संवेदनाओं का महत्व

"तकनीक जीवन को सरल बना सकती है, पर मानवीय संवेदनाएँ ही उसे सुंदर बनाती हैं।"

आज का युग अभूतपूर्व परिवर्तन का युग है। विज्ञान और तकनीक ने हमारे जीवन की गति को इतना तेज़ कर दिया है कि दुनिया सचमुच एक वैश्विक परिवार जैसी प्रतीत होने लगी है। एक क्लिक पर जानकारी उपलब्ध है, मिनटों में संदेश महाद्वीपों को पार कर जाते हैं और अनेक कार्य अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा डिजिटल माध्यमों से पूरे होने लगे हैं। निस्संदेह, यह प्रगति मानव बुद्धि की अद्भुत उपलब्धि है। लेकिन इसी तेज़ रफ़्तार के बीच एक प्रश्न बार-बार मन में उठता है — क्या हम तकनीकी रूप से आगे बढ़ते हुए मानवीय संवेदनाओं को पीछे तो नहीं छोड़ रहे?

संवेदनशीलता मनुष्य की सबसे बड़ी पहचान है। किसी की पीड़ा को समझना, कठिन समय में सहयोग देना, दूसरों की सफलता पर प्रसन्न होना और आवश्यकता पड़ने पर बिना किसी स्वार्थ के सहायता करना — यही वे गुण हैं जो समाज को मजबूत बनाते हैं। यदि ज्ञान के साथ संवेदना न हो, तो प्रगति अधूरी रह जाती है।

कार्यालय इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। किसी भी संस्थान की सफलता केवल आधुनिक संसाधनों, नियमों या तकनीकी दक्षता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि वहाँ कार्य करने वाले लोगों के व्यवहार और आपसी विश्वास पर भी आधारित होती है। जब सहकर्मी एक-दूसरे के प्रति सम्मान रखते हैं, संवाद सकारात्मक होता है और सहयोग की भावना बनी रहती है, तब कार्य का वातावरण अधिक स्वस्थ, प्रेरणादायक और उत्पादक बन जाता है। इसके विपरीत, यदि संवाद में कटुता, असंवेदनशीलता या उदासीनता आ जाए, तो उत्कृष्ट संसाधन भी अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाते।

डिजिटल युग में हमारा अधिकांश संवाद स्क्रीन के माध्यम से होता है। ई-मेल, संदेश और ऑनलाइन बैठकों ने दूरी अवश्य कम की है, लेकिन कई बार आत्मीयता भी कम कर दी है। ऐसे समय में एक मुस्कान, एक धन्यवाद, किसी का हाल-चाल पूछ लेना या कठिन परिस्थिति में किसी सहकर्मी का मनोबल बढ़ाना छोटे-छोटे कार्य लग सकते हैं, पर इनका प्रभाव बहुत गहरा होता है। यही छोटे व्यवहार कार्यस्थल की संस्कृति को सकारात्मक बनाते हैं।

मानवीय संवेदनाएँ केवल कार्यस्थल तक सीमित नहीं हैं। परिवार, समाज और राष्ट्र—हर स्तर पर इनका महत्व समान है। बच्चों में करुणा, बड़ों के प्रति सम्मान, पर्यावरण के प्रति

जिम्मेदारी और समाज के कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति — ये सभी संवेदनशील समाज की पहचान हैं। जब हम अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों को भी समझते हैं, तभी वास्तविक विकास संभव होता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम तकनीक और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन बनाए रखें। नई तकनीकों को अपनाएँ, कार्यकुशलता बढ़ाएँ, समय के साथ आगे बढ़ें; पर साथ ही यह भी सुनिश्चित करें कि हमारी भाषा में विनम्रता, व्यवहार में सम्मान और निर्णयों में मानवीय दृष्टिकोण बना रहे। यही संतुलन हमें एक बेहतर कर्मचारी, बेहतर नागरिक और बेहतर इंसान बनाता है।

अंततः, किसी व्यक्ति की महानता केवल उसकी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उसके व्यवहार से आँकी जाती है। पद, प्रतिष्ठा और सफलता समय के साथ बदल सकते हैं, लेकिन संवेदनशीलता, सहयोग और सद्भाव जैसे गुण जीवनभर लोगों के हृदय में स्थान बनाए रखते हैं। यही वे मूल्य हैं जो व्यक्ति, संस्था और समाज — तीनों को सशक्त और समृद्ध बनाते हैं।

निष्कर्ष:

विकास का वास्तविक अर्थ केवल आधुनिकता नहीं, बल्कि ऐसी प्रगति है जिसमें तकनीक के साथ मानवीयता भी समान रूप से आगे बढ़े। जब ज्ञान के साथ करुणा, दक्षता के साथ संवेदना और सफलता के साथ विनम्रता जुड़ जाती है, तभी एक सशक्त समाज और श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण होता है।



श्री रोहित तोमर, लेखापरीक्षक

हिंदी की मिठास, रिश्तों का एहसास।

चार धाम यात्रा "एक सुखद अनुभव"



भाग्य किसी के जगते हैं तो, ईश कृपा हो जाती है।
कृपा प्रभु की होती है तो, नई राह खुल जाती है॥
तब औचक ही उसके दिल में, नया ख्याल कोई आता है।
वही ख्याल उसके आगे की, सारी राह दिखाता है॥
ऐसा ही ख्याल एक दिन, मेरे भी मन में आया।
चार धाम की यात्रा की जाए, ऐसा संदेश लाया॥
खोज बीन फिर शुरू हो गई, कैसे यात्रा की जाए।
कौन साथ हो, कैसा गुप हो, और कैसे जाया जाए॥
पूछताछ फिर मैंने अपने सारे घर वालों से की।
कठिन सफर है, खर्चा भी है, सबको यही सूचना दी॥
हिम्मत कोई कर नहीं पाया, सिवा एक भाई के।
कुछ को तो डर था शरीर का, कुछ मारे महँगाई के॥
पाँच लोग का गुप बना, जिसमें हम दोनों भाई।
बीवी मेरी बेटा मेरा, साथ में उसकी ताई॥
यूँ तो ताई के शरीर के, वजन से धरती हिलती है।
पर यात्रा जाने को ताई ने हिम्मत दिखलाई॥



ट्रेन की सीटें बुक हुईं, दिल्ली से हरिद्वार।



यात्रा के आरम्भ का स्थल, बना हरि का द्वार॥



ट्रैवलोइ ट्रैवल एजेंसी ने, सारा काम कराया था।



आना-जाना रहना खाना, पैकेज ही में समाया था॥



मिली अटिंगा गाड़ी थी, और संजय उसके चालक थे।



पर केदार कृपा से संजय, पूरे आज्ञा पालक थे॥



तीन मई को सुबह सवेरे सात बजे हम निकल गए।



रेलवे स्टेशन हरिद्वार से, सभी सहसपुर पहुँच गए॥



उस कस्बे में एक हमारी बुआ के बेटे रहते हैं।



जिनको हम सब बड़े प्यार से प्रमोद भैया कहते हैं॥



सभी की सहमति ये बनी, उनके घर पर जाया जाए।



नाशते का था समय, सो उनके घर पर कुछ खाया जाए॥



इसी बहाने उनसे भी कुछ प्रेम मिलन हो जाएगा।



समय की कोई कमी नहीं थी, कुछ तो आनंद आएगा॥"



निकले हम उनके घर से, पकड़ राह यमुनोत्री की।



दृश्य जहाँ भी मिला सुगम फिर खूब वहाँ पर मस्ती की॥



खरसाली में यमुनाभक्ति, होटल में हम ठहरे थे।



बर्फीली थी हवा चल रही, और मेघों के पहरें थे॥



खाना खाया होटल में और, रात को फिर विश्राम किया।



सुबह सवेरे यमुनोत्री को, फिर पैदल प्रस्थान किया॥



सात किलोमीटर चढ़कर, यमुना मईया का दीदार किया।



जीरो डिग्री तापमान में, तस कुण्ड स्नान किया॥



यमुना मईया के आँचल में भी थोड़ी सी मस्ती की।

चावल पकवाये पानी में, और मंदिर में भक्ति की॥

निकल पड़े वापस होटल को, एक धाम पूरा करके।

आशीर्वाद मईया का लेकर, एक बोटल में जल भरके॥

वापस पहुँच गए होटल में, रात को फिर विश्राम किया।

सुबह सवेरे अगले दिन, गंगोत्री को प्रस्थान किया॥





उत्तरकाशी पड़ा मार्ग में, क्योंकि राह कुछ लंबी थी।



ठहर गए होटल एकान्त में, पीछे गंगा बहती थी।।



उसी शाम को गंगा माँ का जी भर के दीदार किया।



किया ध्यान कुछ देर और फिर, गंगाजल आचमन किया।।



खाना खाकर रात को, सोए हम भरपूर।



क्योंकि सवेरे फिर हमको, जाना था अति दूर।।



अगले दिन हम चल पड़े, गंगोत्री के धाम।



जिनका हमने सदियों से, सुना हुआ था नाम।।



उस रस्ते के दृश्यों का था, नहीं कहीं कुछ मेल।



स्विटजरलैंड, यूरोप के साइट, उनके आगे फेल।।



गंगोत्री में जाकर हमने, गंगा में स्नान किया।



ध्यान किया, योग किया और भक्ति का आनन्द लिया।।



तृप्ति जब आत्मा को मिल गई, तन और मन सब शान्त हुआ।



दर्शन से गंगा मईया के, फिर आगे की मिली दुआ।।



वापस लौटे दर्शन करके, फिर उत्तरकाशी आये।



पायलट बाबा के मंदिर के, दृश्य भी हमको अति भाये।।



मेरे आराध्य शिव के दर्शन की, अब मेरी तैयारी थी।।



नैना जिसको तरस रहे थे, अब दर्शन की बारी थी।।



अस्सी कोस दूर था फाटा, उत्तरकाशी से भाई।



उसके ऊपर जाम के कारण, रात को कार पहुँच पाई।।



थके हुए थे सभी, तो खाना खाकर, फिर हम लेट गए।।



गौरी कुण्ड पहुँचने में भी, अगले दिन हम लेट भये।।



गौरी कुण्ड पहुँचकर हमने, फिर उसमें स्नान किया।

माँ गौरा के दर्शन करके, उनका आशीर्वाद लिया।।

फिर क्या था तैयारी थी, बाबा केदार की यात्रा की।

महिला बैठी घोड़ों पर, पुरुषों ने पैदल यात्रा की।।

बहुत सुहाना मौसम था, बारिश का अता-पता ना था।

मन प्रसन्न था अति उमंग थी, पैदल ही तो जाना था।।

भीम बली को पार कर गए, हम बातों ही बातों में।



निंबू पानी, दही पिया और, ले लिए केले हाथों में॥
 रास्ते में कुछ बर्फ पड़ी, जिसका हमने आनंद लिया।
 बर्फ के गोले बना-बना कर, नव अनुभव महसूस किया॥
 सबसे पहले बेस कैंप में, पहुँचे घोड़े वाले।
 उनके पीछे-पीछे पहुँचे, फिर पुनीत मतवाले॥
 मैं था पुत्र पुनीत के पीछे, मेरे पीछे भाई।
 पाँच बजे सब पहुँचे, फिर कुछ खाने की मन में आई॥



चार धाम यात्रा

फिर सीधे आश्रम में जाकर, जल्दी से हम फ्रेश हुए।
 केदारनाथजी के दर्शन को, तन और मन से लैस हुए॥
 पहुँचे जब मंदिर के आगे, भीड़ लगी थी भारी।
 पर स्टाफ बताकर, भाई साहब ने बाजी मारी॥
 जी भर के दर्शन किए, तृप्त हुआ चित आज।
 कृपा हुई केदार की, पूर्ण हो गये काज॥
 जी भर दर्शन किए वहीं पर, फिर सबने खाना खाया।
 तब आश्रम में जाकर सबने, खूब रेस्ट फरमाया॥
 सुबह सवेरे उठ पुरुषों ने, काल भैरव प्रस्थान किया।
 दर्शन करके काल भैरव का, दिल से आशीर्वाद लिया॥



निकल पड़े थे उस दिन हम, बद्री विशाल के दर्शन को।
भोले के सानिध्य में हमने, शुद्ध किया था तन मन को॥
विदा हुए केदारनाथ से, शाम को फाटा पहुंच गए।
थके हुए थे खाना खाकर, रुम में अपने पसर गये॥
अगले दिन बद्री विशाल के, प्रस्थान की तैयारी थी।
तीन धाम की संतुष्टि, चौथे की खूब खुमारी थी॥
बढ़ा काफिला बद्री को, रास्ते में जोशीमठ आया।
नरसिंह भगवान का मंदिर हमको, हृद से ही ज्यादा भाया॥
नरसिंह के दर्शन किए, शंकर का सानिध्य।
जगद्गुरु की कृपा पड़ी, हुए दुर्विचार अवरुद्ध॥
राह पकड़ ली फिर मंजिल की, पहुँचे बद्री नाथ।
रख सामान अनंत होटल में, धोये मुँह और हाथ॥
दर्शन करने निकल पड़े, और पहुँचे उनके धाम।
एक बार फिर अपने भईया, आ गये अपने काम॥
कर जुगाड़ अंदर घुस गए हम, हो गये वीआईपी दर्शन।
कई बार दीदार किया, तुष्ट हो गया तन और मन॥
कर-कर वीडियो काल सभी को, दर्शन खूब कराये।
बद्री विशाल के दर्शन सबके, मन को अति ही भाए॥
रात को भोजन करके हमने, होटल में विश्राम किया।
सुबह सवेरे फिर दर्शन कर, माणा गाँव प्रस्थान किया॥
अंतिम गाँव है ये भारत का, आगे चीन की सीमा है।
सरस्वती बहती है यहाँ पर, व्यास गुफा की महिमा है॥
मानसरोवर का भी जल, आचमन हेतु मिल जाता है।
कहते हैं वो जल सीधा, कैलाश पर्वत से आता है॥
वेदव्यास ने वेद रचे, और गणेश की कलम चली।
स्वर्ग चढ़े थे जहाँ से पांडव, यहाँ से पगडंडी निकली॥
दर्शन किए सभी के हमने, सरस्वती का नीर लिया।
चारों धाम को पूरा करके, रुद्र प्रयाग प्रस्थान किया॥



रुद्र प्रयाग के मंत्रा होटल में हमने विश्राम किया।
अंतिम दौर में सुबह सवेरे, देव प्रयाग प्रस्थान किया।।
देव प्रयाग में पहले हमने, संगम में स्नान किया।
आगे चलकर धारी देवी माँ का आशीर्वाद लिया।।
एक ही दिन में धारी देवी, तीनों रूप बदलती है।
सुबह को कन्या, दिन में तरुणा, शाम को बुढ़िया बनती है।।
चार धाम की रक्षा करती, है ये देवी मईया।
बीच नदी में मंदिर स्थित, जाने कौन खिवैया।।
आगे बढ़कर ऋषिकेश में, गंगा का दीदार किया।
राम और लक्ष्मण झूला का, हमने साक्षात्कार किया।।
हरिद्वार के होटल जाकर, फिर अपना सामान रखा।
पहुँच गए हर की पौढ़ी पर, और उसका आनंद चखा।।
गंगा जी की आरती देखी, और घाट पर बैठे हम।
गंगा मईया के दर्शन से, तृप्त हो गया तन और मन।।
पूरी वाले पंडित जी के, होटल से खाना खाया।
खूब टेस्टी खाना था, तो अति विचित्र आनन्द आया।।
रात को जाकर होटल में, फिर हमने नींद निकाली थी।
क्योंकि सुबह फिर मनसा देवी, जाने की बेहाली थी।।
उड़न खटोला लेकर हम, माँ मनसा के द्वारे पहुँचे।
दर्शन कर, लौटे और हमने, लस्सी के गिलास खींचे।।
यात्रा पूरी हो गयी अपनी, शाम को ट्रेन हमारी थी।
संतुष्टि मिल चुकी थी अब, घर आने की तैयारी थी।।
यात्रा के दौरान दोस्तों, एक विलक्षण अनुभव था।
कृपा हुई भोले-बद्री की, जिसके बिन किसमें दम था।।
यही दुआ भोले-बद्री से, ऐसी यात्रा सबकी हो।
उनको अवसर दो अवश्य ही, मिलन की इच्छा जिनकी हो।।



श्री शैलेन्द्र शर्मा, स.ले.प.अ.

सहनशक्ति

सहनशक्ति अपने आप में एक शक्ति है जो मानव को दिन – प्रतिदिन मजबूत बनाती है। सहनशक्ति का यह अर्थ नहीं कि आप कमजोर हैं बल्कि यह भीतर की सबसे बड़ी ताकत है। सहनशक्ति किसी कमजोर व्यक्ति का गुण नहीं, बल्कि एक मजबूत विचारशील और धैर्यवान व्यक्ति का गुण है। सहनशक्ति वह ताकत है जिसमें मनुष्य खुद टूटकर भी दूसरों को जोड़े रखता है। लेकिन मनुष्य सहे तो कितना और कब तक? कभी-कभी अगला किरदार यह नहीं समझता कि क्या उचित है और क्या अनुचित, बस अपनी इच्छाएं और आकांक्षाएं थोपता रहता है। सामने वाले को क्या अच्छा लग रहा है और क्या बुरा, इससे कोई मतलब नहीं होता है, बस अपनी बात मनवाने की धुन रहती है। किंतु आदमी को ऐसा नहीं करना चाहिए, सबकी भावनाओं का आदर करना चाहिए। जो हमें अच्छा न लगे ऐसा बर्ताव हमें दूसरों के साथ नहीं करना चाहिए।

जो बात खुद को बुरी लगती, उसे दूसरों को नहीं कहना चाहिए। हमें कहीं पर भी मतभेद नहीं करना चाहिए। यदि मतभेद की भावना आए भी तो हमें समान रूप से व्यवहार करना चाहिए। सहते रहना और कुछ न कहना भी एक कमजोरी है। जो बात गलत है वो गलत ही कही जानी चाहिए। पर कभी-कभी दूसरों का सम्मान बचाने के लिए हमें झुकना भी पड़ता है। चलो कोई बात नहीं, हमारा झुकना ही सामने वाले का सम्मान है तो यही सही। सहनशक्ति में वो ताकत है जो बिना कुछ कहे ही सही समय पर सही जवाब दे ही देती है। कभी-कभी यह देखा जाता है कि घर परिवार में परिवार के सदस्यों के साथ भी मतभेद होते हैं और अक्सर वही व्यक्ति बुरे समय में काम आता है जिसके साथ गलत व्यवहार या मतभेद होता है।

आज अधिकांश घरों में इसी बात को लेकर झगड़े हैं कि माता-पिता अपने बच्चों में समान रूप से व्यवहार नहीं करते हैं। इसी कारण बच्चों में आपसी रिश्तों को लेकर तकरार बनी रहती है। किसी एक संतान की तरफ झुकाव ही माता-पिता की कमजोरी होती है जो घरों में तकरार का महौल उत्पन्न करती है। यदि सभी सदस्यों का व्यवहार सही हो तो क्लेश की संभावना कम हो जाती है। कभी-कभी जीवन के उतार-चढ़ाव में हम यह नहीं समझ पाते कि हमें किसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए और सामने वाले को भी यह सोचना चाहिए कि जो हमें अच्छा नहीं लगता वैसा व्यवहार हम दूसरों के साथ न करें। जीवन में कब क्या परिस्थिति आ जाए, कब हमें कौन-से हालातों से गुजरना पड़ जाए, कुछ पता नहीं होता। अतः सदैव विनम्र रहें, गलत व्यवहार न करें और न ही गलत व्यवहार करने दें। इसी जिंदगी के सफर में कोई आगे बढ़ जाता है और कोई पीछे छूट जाता है, किसी का कुछ पता नहीं रहता है। कुछ भी स्थाई नहीं है, ये सब जानने के बाद भी लोग गलत व्यवहार करने के लिए तत्पर रहते हैं और उन्हें खुद भी आभास नहीं होता है। जिंदगी न मिले दोबारा अतः जीओ और जीने दो।

श्रीमती नेहा तिवारी, क.अ. अधिकार

क्या है ज़िंदगी

ज़िंदगी के मोड़ पर न जाने
कितने उतार-चढ़ाव आते हैं।
पर इस जैसी उठक-पटक को ही
ए, मेरे दोस्त, ज़िंदगी कहते हैं।

कब आया, कौन आया कहाँ गया पता नहीं
बस आया तो हँसना और गया तो रोना होता है।
ऐसी ही चलती-फिरती इंसानी दुकान को
ए, मेरे दोस्त, ज़िंदगी कहते हैं।



चार पल हंस के लिए और
चार पल दुख में कट जाते हैं।
ऐसे दुख-सुख के चाल-चलन को
ए, मेरे दोस्त, ज़िंदगी कहते हैं।

रोते को हंसा दे कोई तो जोकर
हँसते को रुला दे तो उसे हादसा कहता है।
इस ही खुशी-हादसों की आवाजाही को
ए, मेरे दोस्त, ज़िंदगी कहते हैं।



श्री गुरप्रीत सिंह गांधी, व.ले.प.अ.

माता-पिता के संस्कार

मर्यादा में ही फायदा है।

बात-बात में माता-पिता का हमें टोकना अखरता है। भीतर ही भीतर हम सोचते हैं कि इनकी टोकने की आदत से कब हमारा पीछा छूटेगा। लेकिन इनके टोकने से हमें क्या-क्या फायदे होते हैं? उसकी अहमियत का हमें पता नहीं होता। इसी पर एक लेख प्रस्तुत है:

बड़ी दौड़-धूप के बाद मैं आज एक ऑफिस में इंटरव्यू देने पहुँचा, आज ये जॉब के लिए मेरा पहला इंटरव्यू था। घर से निकलते हुए मैंने सोचा कि अगर आज मैं इस इंटरव्यू में कामयाब हो गया तो वहीं पर नया फ्लैट लेकर शहर में सैटल हो जाऊँगा, रोज-रोज की मम्मी-पापा की चिक-चिक से मेरा पीछा छूटेगा।

सुबह से लेकर रात तक की रोज-रोज की इन बातों से परेशान हो चुका हूँ, जैसे ही उठो तो सुबह जल्दी उठा करो, बिस्तर ठीक से समेटो, जल्दी से नहा लो, फिर नाश्ता मिलेगा, नहाने के बाद भी नल ठीक से बंद किया करो गरम पानी ढुलता रहता है, तौलिया बाहर धूप में डाला करो। नाश्ता करके घर से बाहर निकलो तो पंखा-लाइट बंद करो। क्या-क्या सुनना पड़ता है जल्दी से जॉब लगे तो इस रोज-रोज की मुसीबत से पीछा छूटे और आराम से नयी जगह नई मनपसंद जिंदगी शुरू करूँ।

जैसे ही ऑफिस में इंटरव्यू देने पहुँचा तो देखा कि ऑफिस के बाहर कई फालतु की लाइटें एवं पंखे चल रहे हैं और वहाँ कोई नहीं बैठा तो माता पिता की सीख याद आई और फौरन लाइटें और फालतु के चल रहे पंखे कूलर आदि बंद कर दिए। वॉशरूम में गया तो देखा कि पानी फालतू बह रहा था तो नल बंद कर दिया। आगे गया तो ऑफिस में कुर्सीयाँ इधर-उधर रास्ते में पड़ी थी उनको ठीक किया सामने एक बोर्ड पर लिखा था कि इंटरव्यू कमरे में है तो अपने आप को आईने में देखकर खुद के कपड़े टाई, पैंट, बैल्ट आदि टाइट करके खुद को सही किया डॉक्युमेंट फाईल में माता-पिता की सीख के अनुसार ठीक से व्यवस्थित क्रम में लगा लिए।

आगे बढ़ने पर मुझे गेट-कीपर ने प्रतीक्षा कक्ष में बैठकर इंतजार करने को कहा। मैंने देखा कि मुझसे पहले भी कुछ उम्मीदवार इंटरव्यू देने जाते और कुछ समय बाद निराश होकर लौट आते, थोड़ी निराशा हुई तो माता-पिता की शिक्षा याद आई कि हमेशा आशावादी होना चाहिए। अंततः मेरी बारी भी आ गई जैसे ही मैं अंदर पहुँचा तो सामने बॉस को देखकर अपने आप हाथ जुड़ गए और उन्हें नमस्कार किया। शायद मुझे इस नौकरी की बहुत ज्यादा जरूरत थी

इसलिए माँ-बाप की शिक्षाओं को ध्यान में रखते हुए कि कहीं मुझसे कुछ भी गलती ना हो जाए मैंने अपनी फाईल बॉस को दी तो उन्होंने मुझे बैठने को कहा और मैं इंटरव्यू के लिए

उनके सम्मान में खड़ा रहा और सभी प्रश्नों के तुरंत जवाब देने लगा। सारी औपचारिकता पूर्ण होने के पश्चात बॉस ने मुझसे पूछा कि कल से ज्वाइन कर सकते हो? मुझे विश्वास नहीं हुआ तो मैंने उनसे पूछ लिया कि आप सच बोल रहे हैं? तो उन्होंने कहा कि तुम्हें विश्वास नहीं है तो तुम्हारा ज्वाइनिंग लेटर अभी बनवा देते हैं अगर तुम कल से ज्वाइन कर लो!

मैंने उनसे फिर से पूछा कि सर इतने लोगों में से आपने मुझे ही क्यों चुना और बाकि सबको भेज दिया? तो उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने CCTV द्वारा अंदर आने तक सभी को नोट किया कि किसी में कोई अनुशासन नज़र नहीं आया चाहे उनकी शैक्षिक योग्यता कितना ही अधिक क्यों ना हो। लेकिन तुम्हें देखकर लगा कि तुम्हारे माता पिता ने तुम्हारे अंदर बहुत अच्छे संस्कार डाले हैं कि तुमने अंदर आने से पहले पूरे ऑफिस को अपना समझ कर सबकुछ वही किया जो तुम अपने घर में करते होंगे। इसी अत्म प्रबंधन की विशेषता के कारण तुम्हें ये जॉब दे रहे हैं कि तुम ऑफिस का ठीक से ध्यान रखोगे।

घर पहुंचते ही माता-पिता के पैर छुए तो उन्होंने गले लगा लिया, कि जैसे मेरी योग्यता से मैंने जॉब हासिल की हो जबकि अंदर से मैं जान चुका था कि मुझे जो जॉब मिली वो मेरे माँ-बाप के दिए संस्कारों की वजह से ही मिली थी। धन्य है मेरे माता-पिता जिन्होंने मुझे ऐसे संस्कार दिए। ऐसे माता-पिता को मेरा दिल से नमन है।

सार: अपनी जिंदगी की आजमाइश में माता-पिता की दी गई छोटी-छोटी शिक्षाएं जो मुझे मिली उसकी तुलना में मेरी डिग्री की वो हैसियत नहीं थी कि जो मुझे कामयाबी दिलवाती। जिंदगी में पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ माता-पिता द्वारा दिए गए संस्कारों का ही सर्वोच्च महत्व है जो हमें जीना सिखलाते हैं। संस्कारों में सर्वप्रथम माता-पिता का सम्मान करना सबसे जरूरी है।



श्री वेद प्रकाश खत्री, व.ले.प.

नादान

न तू हिन्दू होता है न ही मुसलमान होता,
जरा से स्वार्थ में आकर जब तू शैतान होता है,
मुकम्मल हो ही जाता है ये मुल्क भी तेरा,
इन्सानियत सीख कर थोड़ी जब तू इन्सान होता है,

मदद के वास्ते उठा सदा तू हाथों को अपने,
करना पूरी लोगों की अधूरी आस और सपने,
वो खुद आकर कहेगा इक दिन ये जान ले तुझसे,
वक्त आने पर तू ही लोगों का भगवान होता है,

मज़हब मेरा वही तो है तेरे धरम के जैसा,
करना है वही तो जो लिखा करम है जैसा,
गीता और कुरां में भी लिखा होगा कहीं पे तो,
नादानी छोड़ भी दे अब तू क्यूं नादान होता है

न तू हिन्दू होता है न ही मुसलमान होता,
जरा से स्वार्थ में आकर जब तू शैतान होता है.....



श्री भूपेंद्र भंडोरिया, स.ले.प.अ.

हिंदी हमारी विरासत है, इसे भविष्य की आवाज़
बनाएँ।

बुढ़ी माँ का इंतजार और आँगन में बची हुई धूप

गाँव छछरपुर में सुबह कभी घड़ी देखकर नहीं होती थी। मुर्गे की बाँग, मंदिर की घंटी, चूल्हे से उठता धुआँ और आँगन में बुहारू लगाती औरतों की आवाज़ ही गाँव की घड़ी हुआ करती थी। उसी गाँव के आखिरी छोर पर एक मिट्टी का छोटा-सा घर था, जिसमें जमुना काकी रहती थीं। उम्र ने उनके बालों को सफेद कर दिया था, लेकिन उनकी आँखों में आज भी वही चमक थी, जो कभी अपने बच्चों को पालते समय हुआ करती थी।

जमुना काकी का एक बेटा था—हरिया। बचपन में बहुत चंचल था। खेतों में दौड़ना, तालाब में कूदना और माँ के पीछे-पीछे घूमना उसकी आदत थी। जब वह छोटा था, तो हर शाम अपनी माँ से एक ही बात कहता—

"अम्मा, मैं बड़ा होकर तुम्हारे लिए पक्का घर बनाऊँगा, जिसमें बारिश में पानी नहीं टपकेगा।"

जमुना काकी हँसकर कहतीं,

"मुझे घर नहीं चाहिए बेटा, बस तू हमेशा पास रहना।"

समय बदला। हरिया बड़ा हुआ, पढ़ाई के लिए शहर गया और फिर वहीं नौकरी करने लगा। शहर ने उसे बहुत कुछ दिया—अच्छी नौकरी, बड़ा मकान और सुविधाएँ। लेकिन धीरे-धीरे गाँव की दूरी बढ़ती गई।

पहले हर महीने चिट्ठी आती थी, फिर त्योहारों पर फोन आने लगे, और फिर फोन भी कभी-कभार ही आने लगा। जमुना काकी हर शाम अपने पुराने लकड़ी के दरवाजे के पास बैठ जातीं। आने-जाने वाले रास्ते को देखती रहतीं।

गाँव की औरतें पूछतीं,

"काकी, किसका इंतज़ार करती हो?"

वह मुस्कुराकर कहतीं,

"किसी का नहीं... बस आदत है रास्ता देखने की।"

एक दिन गाँव के डाकिए ने उन्हें एक मनीऑर्डर दिया। साथ में बेटे की चिट्ठी थी —

"अम्मा, इस बार छुट्टी नहीं मिल पाई। पैसे भेज दिए हैं। अपना ध्यान रखना।"

जमुना काकी ने चिट्ठी को माथे से लगाया, लेकिन आँखों में आँसू आ गए।

उन्होंने धीरे से कहा,

"पैसे से दवा खरीदी जा सकती है बेटा... माँ का इंतज़ार नहीं।"

वह बात हवा में घुल गई, लेकिन नीम का पेड़ सुन रहा था।

कुछ महीनों बाद गाँव में तेज़ बारिश हुई। कच्चे घरों में पानी भर गया। जमुना काकी का घर भी टूटने लगा। गाँव के लोगों ने मिलकर उनका घर ठीक कर दिया। जब हरिया को पता चला, तो वह कई वर्षों बाद गाँव आया।

वह घर के सामने खड़ा रहा। वही टूटा हुआ आँगन, वही नीम का पेड़ और वही मिट्टी की खुशबू... सब कुछ वैसा ही था, लेकिन माँ पहले जैसी नहीं थीं।

वह अंदर गया। जमुना काकी चारपाई पर बैठी थीं। हरिया ने माँ के पैर छुए और कुछ बोल नहीं पाया।

माँ ने उसके सिर पर हाथ रखा और बस इतना कहा— "आ गया बेटा?"

बस यही दो शब्द सुनकर हरिया की आँखें भर आईं। उसे लगा जैसे माँ ने इतने वर्षों की शिकायत को एक पल में माफ कर दिया। उस रात हरिया सो नहीं पाया। वह आँगन में बैठा रहा। चाँदनी में उसे अपना बचपन दिखाई दे रहा था—वही मिट्टी, वही दीवार, वही माँ की आवाज़।

सुबह उसने माँ से कहा, "अम्मा, अब मैं आपको अपने साथ शहर ले जाऊँगा।" जमुना काकी मुस्कुराई और बोलीं, "बेटा, पेड़ को उखाड़कर कहीं और लगा दो तो वह शायद जीवित रह जाए, लेकिन उसकी छाँव बदल जाती है। मेरा जीवन इसी मिट्टी में बीता है। मुझे यहीं रहने दे। बस तू कभी-कभी आकर इस आँगन में बैठ जाना।"

हरिया ने माँ का हाथ पकड़ लिया। उस दिन उसने समझा कि माता-पिता को हमेशा बड़े घरों की जरूरत नहीं होती। उन्हें बस अपने बच्चों के समय की, अपनापन भरी दो बातों की और कभी-कभी सिर पर रखे एक हाथ की जरूरत होती है।

कुछ साल बाद जब जमुना काकी इस दुनिया से चली गईं, तो हरिया ने शहर की नौकरी छोड़कर गाँव में ही रहना शुरू कर दिया। उसने गाँव के बच्चों के लिए पुस्तकालय खोला और हर शाम नीम के पेड़ के नीचे बैठकर उन्हें कहानियाँ सुनाने लगा।

एक बच्चा अक्सर पूछता, "हरिया दादा, आप शहर छोड़कर गाँव क्यों आ गए?"

हरिया मुस्कुराकर नीम की छाँव को देखते हुए कहते—"क्योंकि मुझे देर से समझ आया कि कुछ रिश्ते इंतज़ार नहीं करते... वे बस चुपचाप हमारा रास्ता देखते रहते हैं।"

और छछरपुर का वह पुराना आँगन आज भी हर शाम धूप की आखिरी किरणों को अपने अंदर सँभाल लेता है।

संदेश: जीवन की दौड़ में आगे बढ़ना अच्छी बात है, लेकिन उन हाथों को भूल जाना उचित नहीं जो हमें चलना सिखाते हैं। रिश्तों की गर्माहट ही जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति है।

श्री रोहित तोमर, लेखापरीक्षक

रक्षा बंधन

रक्षाबंधन

समय से परे

एक पवित्र बंधन

मेरी राखी की रखना लाज भईया,
मैं तो राखी बांधू हर साल भईया।

सोना न मांगू मैं चांदी न मांगू,
रखना मेरा तुम ख्याल भईया,
मैं तो राखी बांधूगी हर साल भईया।

रुपैया न मांगू मैं साड़ी न मांगू,
मांगू मैं तेरा प्यार भईया,
मेरी राखी की रखना लाज भईया।

किसी कारण मैं आ न सकू,
चले आना तुम मेरे पास भईया,
मेरी राखी की रखना लाज भईया,
मैं तो राखी बांधू हर साल भईया।



श्रीमती मंजू मल्होत्रा, व.ले.प.अ.

कार्यालय का अविस्मरणीय दिन

(संस्मरण)

कार्यालय केवल फाइलों, बैठकों और समय-सीमाओं का स्थान नहीं होता; यह उन रिश्तों का भी संसार है जहाँ सहयोग, संवेदनशीलता और मानवीयता हर दिन नए रूप में दिखाई देती है। वर्षों की सेवा के दौरान अनेक घटनाएँ स्मृतियों में दर्ज हुईं, लेकिन एक दिन ऐसा आया जिसने कार्यालय के प्रति मेरी सोच को और अधिक गहरा कर दिया। वह दिन सामान्य दिनों की तरह ही शुरू हुआ था। सभी कर्मचारी अपने-अपने कार्य में व्यस्त थे। अचानक सूचना मिली कि हमारे एक सहकर्मी के परिवार के सदस्य की तबीयत गंभीर हो गई है और उन्हें तत्काल अस्पताल ले जाना है। वे घबराए हुए थे और समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें।

समाचार मिलते ही पूरे कार्यालय का वातावरण बदल गया। किसी ने तुरंत वाहन की व्यवस्था की, किसी ने अस्पताल से संपर्क किया, तो किसी ने आवश्यक दस्तावेज़ और औपचारिकताओं की जिम्मेदारी संभाल ली। कुछ साथियों ने स्वेच्छा से रक्तदान के लिए अपना नाम भी दे दिया। उस समय किसी ने यह नहीं सोचा कि यह कार्य उसकी जिम्मेदारी है या नहीं; सभी का एक ही उद्देश्य था—अपने साथी की हर संभव सहायता करना।

दिन भर कार्यालय में काम भी चलता रहा और सहकर्मी के परिवार की चिंता भी सबके मन में बनी रही। शाम तक यह सुखद समाचार मिला कि समय पर उपचार मिलने से स्थिति नियंत्रण में है। यह सुनते ही पूरे कार्यालय में जैसे राहत की साँस ली गई। हर चेहरे पर संतोष था कि सामूहिक प्रयास रंग लाया।

कुछ दिन बाद जब हमारे सहकर्मी कार्यालय लौटे, तो उनकी आँखों में कृतज्ञता साफ झलक रही थी। उन्होंने कहा, "मैं अकेला नहीं था। उस कठिन समय में पूरा कार्यालय मेरे परिवार की तरह मेरे साथ खड़ा था।" उनके शब्द सुनकर मुझे महसूस हुआ कि किसी भी संस्था की सबसे बड़ी शक्ति उसकी इमारत या संसाधन नहीं, बल्कि उसके लोग होते हैं। कार्यकुशलता आवश्यक है, पर उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है मानवीय संवेदना। जब सहकर्मी एक-दूसरे का संबल बनते हैं, तब कार्यालय केवल कार्यस्थल नहीं रहता, बल्कि विश्वास और अपनत्व का परिवार बन जाता है।

आज भी जब उस दिन को याद करता हूँ, तो यह विश्वास और दृढ़ हो जाता है कि सच्ची सफलता केवल लक्ष्य पूरे करने में नहीं, बल्कि एक-दूसरे के सुख-दुःख में साथ खड़े रहने में है। वही दिन मेरे लिए कार्यालय का सबसे अविस्मरणीय दिन बन गया। उसने सिखाया कि फाइलें और दायित्व समय के साथ बदल जाते हैं, लेकिन सहयोग, करुणा और आत्मीयता की छाप जीवन भर बनी रहती है।

उस दिन मैंने जाना कि किसी भी कार्यालय की वास्तविक पहचान उसके भवन या व्यवस्था से नहीं, बल्कि वहाँ कार्य करने वाले लोगों की संवेदनशीलता, सहयोग-भावना और मानवीय मूल्यों से होती है। यही अनुभव आज भी मेरे लिए प्रेरणा का स्रोत है।

श्री भूपेन्द्र सिंह सिरौही, लेखापरीक्षक

जेनरेशन जेड (Gen Z)

हाथों में दुनिया,
आँखों में स्क्रीन,
सपनों की उड़ान,
सोच नई-सी नवीन।
कल की परवाह कम,
आज का जुनून,
अपने ही रंग में
रचते हैं सुकून।



प्रश्नों से भरी सोच,
पर हौसलों की कमी नहीं,
रास्ते नए चुनते हैं,
भीड़ की उन्हें ज़रूरत नहीं।
कभी लाइक्स की दुनिया,
कभी मन का अकेलापन,
हँसी के पीछे छुपा
कितना-सा उलझापन।

बदलते समय की धड़कन,
नई पीढ़ी की पहचान—
जेन ज़ी केवल एक पीढ़ी नहीं,
भविष्य का लिखा हुआ बयान।



श्रीमती टीना आनंद गिरधर, डी.ई.ओ.

एक बरसाती दिन की सीख

(संस्मरण)

जीवन की लंबी यात्रा में कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं जो समय बीत जाने के बाद भी मन के किसी कोने में ताज़ा बनी रहती हैं। मेरे जीवन का एक ऐसा ही संस्मरण आज भी मुझे मानवीय संवेदनाओं का महत्व याद दिलाता है।

यह कई वर्ष पहले की बात है। बरसात का मौसम अपने पूरे शबाब पर था। एक दिन कार्यालय से लौटते समय अचानक मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई। देखते ही देखते सड़कें पानी से भर गईं। बसें रुक-रुक कर चल रही थीं और लोग किसी सुरक्षित स्थान की तलाश में इधर-उधर भाग रहे थे। मैं भी एक बस-स्टॉप की शरण में खड़ा हो गया।

उसी समय मेरी नज़र एक वृद्ध व्यक्ति पर पड़ी। उनके हाथ में पुरानी-सी फाइल थी और कपड़े पूरी तरह भीग चुके थे। उम्र अधिक होने के कारण वे ठीक से चल भी नहीं पा रहे थे। उनके चेहरे पर चिंता साफ दिखाई दे रही थी। मैंने आगे बढ़कर उनसे बात की। पता चला कि वे किसी सरकारी कार्य से शहर आए थे और अब अपने घर लौटने की चिंता उन्हें सता रही थी।

मैंने उन्हें अपने छाते के नीचे जगह दी। कुछ देर बाद जब बस आई, तो भीड़ इतनी अधिक थी कि उनके लिए चढ़ना कठिन हो गया। मैंने अन्य यात्रियों से अनुरोध किया और उन्हें सुरक्षित बस में बैठाया। संयोग से मेरा रास्ता भी वही था, इसलिए मैं उनके साथ ही चला गया। रास्ते भर उन्होंने अपने परिवार, गाँव और जीवन के संघर्षों की बातें साझा कीं। उनके शब्दों में अनुभव था, सादगी थी और जीवन के प्रति अटूट विश्वास था।

अपने गंतव्य पर उतरते समय उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर कहा, "बेटा, आज तुमने केवल मेरी सहायता नहीं की, बल्कि मुझे यह विश्वास भी दिलाया कि इस दुनिया में संवेदनशील लोग आज भी हैं।"

उनके ये शब्द मेरे मन में गहराई तक उतर गए। उस दिन मुझे एहसास हुआ कि किसी की मदद करने के लिए बड़े साधनों की नहीं, बल्कि बड़े मन की आवश्यकता होती है। कुछ मिनटों का सहयोग, कुछ आत्मीय शब्द और थोड़ी-सी संवेदना किसी के जीवन में आशा की किरण बन सकती है।

आज भी जब बरसात की पहली फुहार पड़ती है, उस वृद्ध का मुस्कुराता चेहरा और उनका आशीर्वाद स्मृतियों में जीवंत हो उठता है। वह घटना मुझे हर बार याद दिलाती है कि जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धियाँ पद, प्रतिष्ठा या धन नहीं, बल्कि वे क्षण हैं जब हमारे कारण किसी के चेहरे पर मुस्कान आ जाए।

समय के साथ बहुत कुछ बदल जाता है, पर मनुष्यता का मूल्य कभी नहीं बदलता। वही दिन मेरे लिए एक साधारण बरसाती दिन नहीं, बल्कि जीवन का अमूल्य पाठ बन गया — संवेदना ही सबसे बड़ी संपत्ति है, और निस्वार्थ सहायता ही मनुष्य होने का सबसे सुंदर परिचय।

श्री नीरज कुमार, लेखापरीक्षक

किसान-मिट्टी-पैसे

आओ तुम्हें दर्शन करायें,
मिट्टी के उन पैसों से
उपजाए हम अन्न,
लगे तुम्हें वो जिंदगी से...

दफ़न है आवाज़ रेत की टीलों में,
मिलाये तुम्हें दो टुक हकीकत से
बगियां में फूल खिला है जमींदारो के,
महोबत हो गई है कर्जों से
आओ तुम्हें दर्शन करायें
मिट्टी के उन पैसों से...

डर लगा है हैवन जैसे कीट से,
उगी है जिंदगी अभी ज़रा सी ज़मीन से
मन की मंजिल दूर है हकीकत से,
हालातों पर फक्र है हमे हमीसे
आओ तुम्हें दर्शन करायें
मिट्टी के उन पैसों से....

आँख तक पूछा है आज ये धरती से,
इंतेकाम का इंतेहान होगा लेनदारो से
लहरा रहा है खरा सोना धरती की छाती से,
पलेगा बढ़ेगा बनेगा हमारा ख्वाब इसी तरह
आओ तुम्हें दर्शन करायें
मिट्टी के उन पैसों से....

श्री हिमांशु सतोरिया, स.ले.प.अ.

विवाह: समाज की आधारशिला – चुनौतियां और समाधान

परिवार: समाज की प्रथम इकाई

भारतीय चिंतन और संस्कृति में विवाह को एक अनुबंध नहीं, बल्कि एक संस्कार माना गया है। यह समाज की 'प्रथम इकाई' है। जिस प्रकार ईंटों से दीवार और दीवारों से घर बनता है, उसी प्रकार विवाह से परिवार और परिवारों से एक सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण होता है। विवाह की परिभाषा को गहराई से समझने के लिए यह पंक्ति सटीक है:

"विवाह केवल दो शरीरों का मिलन नहीं, बल्कि दो आत्माओं का गठबंधन है। यह वह कच्चा धागा है जो विश्वास की पक्की डोर से बंधा होता है।"

समाज का जीवन में महत्व

विवाह मनुष्य को 'मैं' से 'हम' की यात्रा कराता है। यह व्यक्ति को संयम, समर्पण और सह-अस्तित्व का पाठ पढ़ाता है। यह केवल वंश वृद्धि का माध्यम नहीं, बल्कि भावनात्मक सुरक्षा का कवच है। जब व्यक्ति विवाह के बंधन में बंधता है, तो वह समाज के प्रति अधिक जिम्मेदार और अनुशासित हो जाता है।

वर्तमान स्थिति: टूटते भरोसे और विखरते रिश्ते

आज हम एक ऐसे दौर में हैं जहाँ विवाह संस्था संक्रमण काल से गुजर रही है। पाश्चात्य संस्कृति का आधुनिकीकरण और 'व्यक्तिगत स्वतंत्रता' (Individual Freedom) की अति ने रिश्तों की नींव हिला दी है। पहले रिश्तों में 'त्याग' का स्थान सर्वोपरि था, लेकिन आज 'अहम' (Ego) ने जगह ले ली है। आज की स्थिति पर यह शेर बहुत मौजूं है:

"मकान तो ऊंचे बन गए शहरों में बहुत, मगर अफसोस कि अब उनमें 'घर' नहीं बसते।"

डिजिटल युग में धैर्य की कमी और विकल्पों की भरमार ने रिश्तों की उम्र कम कर दी है। लोग अब रिश्तों को 'निभाने' की जगह उन्हें 'आजमाने' लगे हैं, जिससे विश्वास का संकट गहरा गया है।

जिम्मेदारियों से दूर भागते युवा

आज का युवा वर्ग विवाह को एक 'बंधन' या करियर में बाधा मानने लगा है। आर्थिक दबाव और अपनी निजता (Privacy) खोने के डर से वे विवाह जैसी जिम्मेदारी से कतरा रहे हैं। उन्हें लगता है कि अकेले रहना ही असली आज़ादी है, लेकिन उन्हें यह समझना होगा:

"अकेले चलोगे तो शायद तेज चल पाओगे, लेकिन अगर दूर तक जाना है, तो किसी का हाथ थामना ही पड़ेगा।"

पिंजरे से उड़ा पंछी भी शाम को अपनी शाख (Branch) ढूँढता है। स्वतंत्रता अच्छी है, लेकिन अगर उसकी कीमत 'अकेलापन' है, तो वह बहुत महंगी है।

समाज और देश पर प्रभाव

यदि विवाह संस्था कमजोर होती है, तो समाज की रीढ़ टूट जाएगी। संयुक्त परिवारों का बिखरना और एकल परिवारों (Nuclear Families) का भी टूटना, बुजुर्गों को असुरक्षित और युवाओं को अवसाद (Depression) की ओर धकेल रहा है। एक बिखरा हुआ परिवार कभी भी एक जिम्मेदार नागरिक का निर्माण नहीं कर सकता, जिससे अंततः राष्ट्र की प्रगति बाधित होती है।

समाधान: कैसे बचाएं यह पवित्र बंधन?

इस पवित्र संस्था को बचाने के लिए आधुनिकता और परंपरा में संतुलन बनाना होगा। संवाद (Communication) को बढ़ाना होगा और अवास्तविक उम्मीदों (Unrealistic Expectations) को छोड़ना होगा। युवाओं को यह सिखाना होगा कि झुकना कमजोरी नहीं है।

"झुकने से अगर रिश्ता गहरा हो, तो झुक जाओ, पर हर बार तुम्हें ही झुकना पड़े, तो रुक जाओ।"

रिश्ता बराबरी और सम्मान का होना चाहिए। माता-पिता को भी चाहिए कि वे बच्चों को रिश्तों का महत्व समझाएं। विवाह कोई जंजीर नहीं, बल्कि वह प्रेम सूत्र है जो दो परिवारों को जोड़ता है। समय बदल रहा है, चुनौतियां नई हैं। लेकिन प्रेम और साथ की आवश्यकता आज भी वही है। हम विवाह को महज एक उत्सव या दिखावा न मानकर, इसके मूल उद्देश्य पर पुनर्विचार करें। अंत में, विवाह के महत्व को इन पंक्तियों के साथ समझा जा सकता है:

"जीवन की धूप में जब साये साथ छोड़ देते हैं, तब एक जीवनसाथी का हाथ ही छांव बन जाता है।"

वक्त आ गया है कि हम अपनी जड़ों की ओर लौटें। विवाह रूपी इस वृक्ष को सूखने से बचाने के लिए हमें 'विश्वास' का जल और 'समर्पण' की खाद डालनी ही होगी। अन्यथा, बिना मज़बूत रिश्तों के हम उस 'भीड़' का हिस्सा बन जाएंगे, जहाँ हर कोई साथ तो है, पर कोई किसी के पास नहीं।

श्री भूपेंद्र मीणा, स.ले.प.अ.

माँ का भेदभाव

रानू, रानू कहाँ रह गई चिल्लाती हुई रजनी कमरे में प्रवेश करती है तो रानू सहम जाती है। खैर जो भी हो यह तो रोज का ही किस्सा था रजनी जो कि एक माँ है लेकिन अपने तीन बच्चों रानू, रीमा और राहुल में से उसे सबसे ज्यादा कमी रानू में ही दिखती थी। रजनी एक छोटे से गाँव में अपने तीन बच्चों—बेटी रानू, रीमा और बेटे राहुल—के साथ रहती थी। रजनी के पति महेश की एक कपड़े की दुकान थी। रजनी अपने बेटे राहुल से बहुत प्यार करती थी। वह उसकी हर इच्छा पूरी करती, उसके लिए अच्छे कपड़े और पसंद का खाना बनाती। दूसरी ओर, रानू से वह घर के सारे काम करवाती और उसकी छोटी-सी गलती पर भी उसे डाँट देती। सभी संतानों में से रानू सबसे बड़ी थी जो कि सातवीं कक्षा में पढ़ती थी, तथा रीमा पाँचवीं एवं राहुल तीसरी कक्षा में पढ़ता था।



समय बीतता गया किंतु रजनी का व्यवहार रानू के प्रति सख्त ही होता चला गया। अपनी तीन संतानों में उसे एक समान व्यवहार ना करने की आदत सी पड गई थी। वैसे तो माँ भगवान का दूसरा रूप होती है लेकिन कभी-कभी कुछ बातें अपवाद का कारण बन जाती है। लोग बच्चों को गलत करते देख सकते हैं और बच्चे गलत भी हो सकते हैं किंतु यदि बात माँ की आती है तो एक बार विश्वास करना मुश्किल हो जाता है। खैर, जो भी हो कभी-कभी इस चंचल अश्वरूपी मन का क्या पता कब क्या करवा दे और कहाँ कहाँ घूमा दे। आखिर मन तो मन ही है इसका कुछ नहीं पता कब क्या करवा दे। समय का क्या कब बीत जाता है पता

ही नहीं चलता समय के साथ बच्चे बड़े होते गए। एक दिन रानू स्कूल से बहुत अच्छे अंक लेकर घर लौटी। वह खुशी-खुशी अपनी माँ को रिपोर्ट कार्ड दिखाने गई। लेकिन रजनी ने बिना देखे कहा, “अच्छे अंक आ गए तो क्या हुआ ? घर का काम भी करना सीखो।” उसी शाम राहुल के परीक्षा में सामान्य अंक आए। रजनी ने उसे गले लगाकर कहा, “कोई बात नहीं बेटा, अगली बार और मेहनत करना।”

रानू चुपचाप यह सब देखती रही। उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसने पहली बार अपनी माँ से पूछा, “माँ, क्या मैं आपकी बेटी नहीं हूँ? अगर राहुल से गलती हो जाए तो आप उसे प्यार करती हैं, लेकिन मुझसे छोटी-सी गलती पर भी नाराज़ हो जाती हैं। क्यों?”

रजनी के पास कोई उत्तर नहीं था क्योंकि उसे अपनी गलती का अहसास ही नहीं था। जिंदगी में कभी-कभी हमें यह भान ही नहीं होता कि हम क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं और एक बात यह भी सही है कि जब सहने वाला सहन करता जाता है तो सामने वाले को अपनी गलती का अहसास होने भी नहीं देता। जब हमारे अपने ही हमें दुख देने लगते हैं तो पीड़ा असह्य हो जाती है। इस प्रकार के दुख को हम किसी से बयाँ भी नहीं कर सकते हैं।

जब भी रजनी अचानक बीमार पड़ जाती, रानू उनकी दिन-रात उसकी सेवा करती। दवा से लेकर खाना बनाने तक, उसने माँ का पूरा ध्यान रखा। राहुल भी अपनी माँ से प्यार करता था, लेकिन वह उनकी देखभाल के लिए उतना समय नहीं दे पाया। लेकिन फिर भी रजनी को समझने के लिए यह काफी नहीं था। रानू के पिता को रजनी के द्वारा किए गए व्यवहार पर दुख बहुत होता था और वे रजनी को समझाते भी थे पर रजनी थी कि उसे किसी भी बात कोई असर ही नहीं होता था। समय बीतता गया रजनी के व्यवहार में कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ। रजनी के सभी बच्चे बड़े हो गए रानू के भी ग्रेजुएशन पूरे हो गए उसने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करनी शुरू कर दी थी, बाकी दोनों बच्चे भी अभी पढ़ ही रहे थे।

रजनी हमेशा रीमा और राहुल के ही बारे में ही सोचती, रानू में तो उसे केवल कमियाँ ही दिखाई देती। उसके इस व्यवहार के कारण रानू को बहुत दुख होता लेकिन अपनों के रिश्तों में कोई कर भी क्या सकता है। अपनी ही माँ का व्यवहार इस तरह का हो तो कोई कर ही क्या सकता है। रानू सब कुछ बर्दाश्त करती गई। एक दिन रानू का चयन लेखापरीक्षक के पद पर हो गया। एक मध्यमवर्गीय परिवार में इतने संघर्षों के बाद यहाँ तक पहुँचना वो भी इतने तनावपूर्ण माहौल में बहुत ही कठिन था। आखिर रानू ने अपने सब्र का फल पा ही लिया और अपने परिवार का मान भी बढ़ाया। लेकिन वो कहते हैं ना कि नजर को बदला जा सकता है

नजरियो को नहीं। जिसकी जिनके लिए जैसी सोच होती वो चाहे जितना भी कर ले बदलती नहीं है। बिना किसी वजह के व्यक्ति सामने वाले को बुरा मानने लगता है।

बात-बात में नीचा दिखाना उसकी आदत पड़ जाती है। वही हाल रानू की माँ रजनी का था। उसे रानू किसी भी मायने में अच्छी नहीं लगती थी। रानू का सरकारी पद पर चयन होने के बावजूद भी उसकी माँ उसकी प्रतिभा को पहचान नहीं पाई। वह हमेशा अपने तीनों बच्चों में तुलना करती रहती थीं। इंसान जिसे पसंद करता है उसकी बुराईयों को छिपाता है और अच्छाईयां चाहे थोड़ी ही हों उसे बढ-चढ कर बताता है तथा जिसे पसंद नहीं करता उसकी अच्छाईयों को किसी के सामने प्रकट नहीं करता बल्कि बुराईयां ही ढूँढता रहता है। उसके तीनों बच्चों की समय के साथ शादी हो जाती है सभी अपनी-अपनी गृहस्थी में व्यस्त हो जाते हैं। रानू के पिताजी और माँ घर पर अकेले ही रह जाते हैं। समय का पहिया धीरे-धीरे आगे बढ़ता जाता है। उम्र के ढलने के साथ-साथ स्वास्थ्य में भी गिरावट आ ही जाती है। रजनी के दोनो बच्चे रीमा और राहुल तो मां की हाल खबर भी नहीं लेने आते थे, मां के द्वारा पूछने पर कोई ना कोई बहाना बना देते थे। रानू अपना कर्तव्य मानकर बीच-बीच में मां-बाप से मिलने आ जाती और उनकी जरूरतों का सामान, दवाईयाँ आदि देकर चली जाती। रजनी को रीमा और राहुल से ये उम्मीद नहीं थी और वह मन ही मन इस बात से दुखी भी थीं लेकिन किसी से कहती नहीं थी।

रजनी रात-दिन रीमा और राहुल के व्यवहार के बारे में सोचा करती। जिंदगी में हम जिसको भी मान देते हैं और वह हमें उपेक्षित करता है तो मन को बहुत ही ग्लानि होती है। धीरे-धीरे ही सही रजनी को अपनी गलती का एहसास हुआ। एक दिन रजनी ने रानू को फोन करके घर पर बुलाया उसने रानू को गले लगाकर कहा, “बेटी, मैंने तुम्हारे साथ बहुत अन्याय किया। मैंने तुम तीनों में फर्क करके तुम्हारा दिल दुखाया। मुझे माफ कर दो।” रानू की आँखों में आँसू थे, लेकिन इस बार वे खुशी के आँसू थे। उसने कहा, “माँ, मुझे सिर्फ आपका प्यार चाहिए था।” उस दिन से रजनी ने तीनों बच्चों को समान प्यार और सम्मान देना शुरू कर दिया।

बच्चे सभी समान होते हैं। माता-पिता का प्यार और अवसर सभी बच्चों को बराबर मिलना चाहिए। भेदभाव रिश्तों में दूरी पैदा करता है, जबकि समान व्यवहार परिवार को मजबूत बनाता है।

श्रीमती नेहा तिवारी, क.अ. अधिकारी

प्रभु तेरी आस

सब को खुश रखना, मेरे प्रभु,
बस यही अरदास है तुझसे।
दोस्त मानकर दास्ताँ बयान करता हूँ,
इसलिए गिला भी करता हूँ तुझसे।

तेरे बनाए हुए हैं दिन और रात
दुख-सुख की उत्पत्ति भी होती है तुझसे।
तेरी आज्ञा के बिना तो पत्ता भी नहीं हिलता,
और ज़िंदगी चक्र भी चलता है तुझसे।

उम्मीद नहीं विश्वास है, जो होगा
प्रभु की कृपा से अच्छा ही होगा !



मुझे ज्ञान नहीं है तेरा, मेरे प्रभु,
इसलिए तुझ ही को खोजता हूँ तुझसे।
जब मिलना हो तो बेशक आ जाना, मेरे प्रभु,
या मुझे बुला लेना तू खुदसे।

क्यों कि मैं भी तुझसे हूँ, तेरा ही अंश हूँ मैं,
मेरी हर सांस जुड़ी है तुझसे।
जब चाहे प्यार से थपकी दे देना,
जब चाहे विलीन कर लेना मुझको खुदसे।



श्री गुरप्रीत सिंह गांधी, व.ले.प.अ.

तारा और सितारा: जी.डी. सेक्शन की असली पहचान

सरकारी कार्यालय का जी.डी. सेक्शन बाहर से देखने वालों को केवल फाइलों, नोटशीटों और आदेशों का संसार लगता था। लेकिन जो लोग उसके भीतर काम करते थे, वे जानते थे कि यह केवल एक अनुभाग नहीं बल्कि पूरे कार्यालय की धड़कन हैं। यदि जी.डी. सेक्शन एक दिन भी ठहर जाए, तो पूरे कार्यालय की गति धीमी पड़ जाती है।

इसी सेक्शन में दो अधिकारी कार्यरत थे - तारा और सितारा।

दोनों की कार्यशैली बिल्कुल अलग थी।

तारा अत्यंत अनुशासित, शांत और नियमों का अक्षरशः पालन करने वाला अधिकारी था। उनकी मेज पर रखी हर फाइल अपनी बारी का इंतज़ार करती, लेकिन बिना नियमों की जाँच के कोई भी फाइल आगे नहीं बढ़ती थी। उनके लिए सरकारी धन और समय, दोनों की पवित्रता सर्वोपरि थी।

दूसरी ओर सितारा मिलनसार, उत्साही और हर समस्या का व्यावहारिक समाधान खोजने वाले अधिकारी थे। कोई कर्मचारी किसी कठिनाई में हो, किसी अतिथि के ठहरने की व्यवस्था करनी हो,

किसी बैठक की तैयारी करनी हो या अचानक कोई प्रशासनिक समस्या आ जाए - सबकी पहली आवाज होती, "सितारा जी को बुलाइए।"

कार्यालय में अक्सर मज़ाक होता था-

"जहाँ नियम अटक जाएं, वहाँ तारा हैं... और जहाँ काम अटक जाए, वहाँ सितारा हैं।"

एक दिन कार्यालय में सूचना मिली कि अगले ही दिन उच्च अधिकारियों का महत्वपूर्ण निरीक्षण होना है। निरीक्षण के दौरान प्रशासन, व्यय प्रतिपूर्ति, वाहन व्यवस्था, गेस्ट हाउस, बैठक कक्ष, अभिलेख और अनेक महत्वपूर्ण फाइलों की जाँच होनी थी।

पूरा जी.डी. सेक्शन तनाव में था।

कई कर्मचारी घबरा गए। कुछ लोग सोच रहे थे कि इतनी कम अवधि में सब कुछ कैसे होगा।

तभी तारा ने सभी को बुलाकर कहा-

"घबराइए मत। हम सब मिलकर काम करेंगे। नियमों से समझौता नहीं होगा, लेकिन समय का भी पूरा ध्यान रखा जाएगा।"

उधर सितारा ने तुरंत जिम्मेदारियाँ बाँट दीं। किसी को बैठक कक्ष की व्यवस्था, किसी को गेस्ट हाउस, किसी को वाहन, किसी को अभिलेख और किसी को व्यय संबंधी फाइलें सौंप दीं। स्वयं देर रात तक कार्यालय में रुककर हर व्यवस्था की समीक्षा करते रहे।

रात के दस बज चुके थे।

थकान सबके चेहरों पर साफ दिखाई दे रही थी।

तभी कार्यालय के एक वरिष्ठ कर्मचारी बोले-

"इतनी मेहनत कौन याद रखता है? जब सब ठीक रहता है. तब कोई जी.डी. सेक्शन की तारीफ़ नहीं करता।

तारा मुस्कुराया और बोला-

"सरकारी सेवा में हर काम प्रशंसा के लिए नहीं होता। कई बार सबसे बड़ी उपलब्धि यही होती है कि किसी को हमारी मेहनत दिखाई ही न दे, क्योंकि सब कुछ समय पर और सही ढंग से हो गया।"

अगले दिन निरीक्षण प्रारंभ हुआ।

हर फाइल व्यवस्थित मिली। सभी अभिलेख सही पाए गए। गेस्ट हाउस की व्यवस्था उत्कृष्ट थी। बैठक समय पर शुरू हुई। व्यय संबंधी सभी दस्तावेज़ नियमों के अनुरूप थे।

निरीक्षण दल के प्रमुख अधिकारी ने जाते समय केवल एक वाक्य कहा-

"जिस कार्यालय का जी.डी. सेक्शन इतना व्यवस्थित हो, वहाँ अनुशासन अपने आप दिखाई देता है।"

पूरा सेक्शन तालियों से गूँज उठा।

लेकिन सबसे अधिक खुशी तारा और सितारा के चेहरे पर नहीं, बल्कि उन कर्मचारियों के चेहरों पर थी जिन्होंने पूरी रात एक टीम बनकर काम किया था।

उस दिन से कार्यालय में एक नई कहावत प्रचलित हो गई-

"आकाश में तारे और सितारे रात को चमकते हैं, लेकिन कार्यालय का तारा और सितारा दिन में चमका करते हैं - अपने कर्म, ईमानदारी और टीम भावना से।"

वर्षों बाद जब नए कर्मचारी जी.डी. सेक्शन में नियुक्त होते, तो उन्हें सबसे पहले यही कहानी सुनाई जाती।

उन्हें बताया जाता कि जी.डी. सेक्शन की असली पहचान किसी एक अधिकारी से नहीं, बल्कि उस भावना से बनती है जिसमें नियम, जिम्मेदारी, सहयोग और मानवीय संवेदनाएँ साथ-साथ चलती हैं।

और उस भावना के दो प्रतीक थे- तारा और सितारा।



श्री नीरज कुमार, लेखापरीक्षक

क्यों चिंता करें मन मेरे, क्यों चिंता तुझे सताए

चिंता नहीं चिंतन करो,
कट जाए चौरासी के घेरे
क्यों चिंता करें मन मेरे, क्यों चिंता तुझे सताए।

तेरा हर जन्म अनमोला
मिला मानव का तुझे चोला
इस चोले को अच्छे कर्मों से धो ले
क्यों चिंता करें मन मेरे, क्यों चिंता तुझे सताए।

राजस गुण जब-जब बढ़ेगा
सात्विक गुण तेरा साथी बनेगा
तामस गुण तुझे घोर नरक में धकेले
क्यों चिंता करें मन मेरे, क्यों चिंता तुझे सताए।

प्रभु से तू नेह लगा ले
सात्विक होकर इस चोले को बचा ले
फिर पहुंचेगा गुरु (कृष्ण) के डेरे
क्यों चिंता करें मन मेरे, क्यों चिंता तुझे सताए।

नाम सिमरन तू कर ले बन्देया
नेकी कर और भूल जा बन्देया
प्रभु आप ही बांह तेरी पकड़ ले
क्यों चिंता करें मन मेरे, क्यों चिंता तुझे सताए।



श्रीमती मंजू मल्हौत्रा, व.ले.प.अ.

हिंदी का हर शब्द, अपनी मिट्टी की खुशबू है

दीप बनें

अँधियारों को कोसने से,
कब जग में उजियारा होता है?
एक छोटा-सा दीप जलाकर,
जीवन भी सुनहरा होता है।

राह कठिन हो, धूप कड़ी हो,
मन में यदि विश्वास रहे,
संकल्पों की दृढ़ चट्टानों पर,
हर सपना साकार रहे।

सत्य, श्रम और सरल स्वभाव से,
मिलती जग में सच्ची जीत,
मधुर वचन और निर्मल मन से,
हर संबंध बने संगीत।

कर्तव्य-पथ पर जो चलता है,
वही सफलता पाता है,
अपने कर्मों की खुशबू से,
जीवन-उपवन महकाता है।

संदेश:- जीवन की वास्तविक सफलता पद, प्रतिष्ठा या धन में नहीं, बल्कि ईमानदार कर्म,
मानवीय संवेदनाओं और दूसरों के जीवन में प्रकाश फैलाने में निहित है।



श्री नीरज कुमार, लेखापरीक्षक

सच्ची कमाई

राकेश एक सरकारी कार्यालय में वरिष्ठ सहायक था। वह अपने काम में इतना ईमानदार और समयनिष्ठ था कि पूरे कार्यालय में उसकी अलग पहचान थी। उसके लिए नौकरी केवल वेतन पाने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने का अवसर थी।

एक दिन कार्यालय में एक वृद्ध किसान अपनी पेंशन से संबंधित फाइल लेकर आया। उसकी फाइल कई महीनों से अलग-अलग टेबलों पर घूम रही थी। हर बार उसे कोई न कोई नया कागज़ लाने के लिए कह दिया जाता। थका-हारा किसान जब राकेश की मेज तक पहुँचा तो उसकी आँखों में निराशा साफ दिखाई दे रही थी।

राकेश ने धैर्यपूर्वक उसकी पूरी बात सुनी। उसने फाइल की बारीकी से जाँच की और पाया कि सभी आवश्यक दस्तावेज पहले से ही मौजूद थे। केवल लापरवाही के कारण फाइल आगे नहीं बढ़ाई गई थी। उसने उसी दिन संबंधित शाखा से समन्वय किया, आवश्यक अनुमोदन प्राप्त कराया और शाम तक किसान की पेंशन स्वीकृत करवा दी। कुछ दिनों बाद वही किसान अपने खेत की ताज़ी सब्जियाँ और फल लेकर कार्यालय पहुँचा। उसने भावुक होकर कहा, "बेटा, मेरे पास तुम्हें देने के लिए और कुछ नहीं है। इसे मेरी तरफ़ से छोटा-सा उपहार समझकर स्वीकार कर लो।"

राकेश मुस्कराया और विनम्रता से बोला, "बाबा, आपका आशीर्वाद ही मेरे लिए सबसे बड़ा उपहार है। मैंने केवल अपना कर्तव्य निभाया है।" किसान की आँखों से खुशी के आँसू बह निकले। उसने हाथ उठाकर राकेश को लंबी उम्र और सुखी जीवन का आशीर्वाद दिया।

यह घटना पूरे कार्यालय में चर्चा का विषय बन गई। कार्यालय प्रमुख ने अगले मासिक सम्मेलन में राकेश की ईमानदारी, संवेदनशीलता और कर्तव्यनिष्ठा की सराहना करते हुए कहा, "सरकारी सेवा की वास्तविक पहचान नियमों के पालन के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं को समझने में है।" उस दिन राकेश को कोई आर्थिक पुरस्कार नहीं मिला, लेकिन उसे जो सम्मान, विश्वास और आशीर्वाद मिला, वही उसकी सबसे बड़ी कमाई थी। उसने महसूस किया कि धन से बढ़कर लोगों का विश्वास और दिल से निकली दुआएँ होती हैं।

समय बीतता गया। राकेश से प्रेरित होकर कार्यालय के अन्य कर्मचारी भी नागरिकों के प्रति अधिक संवेदनशील और उत्तरदायी बनने लगे। धीरे-धीरे उस कार्यालय की पहचान केवल कार्यकुशलता से ही नहीं, बल्कि मानवीय व्यवहार और उत्कृष्ट सेवा के लिए भी होने लगी।

शिक्षा: सच्ची कमाई धन या उपहार नहीं, बल्कि ईमानदारी से किए गए कार्य के बदले मिलने वाला विश्वास, सम्मान और आशीर्वाद है।

श्री भूपेन्द्र सिंह सिरौही, लेखापरीक्षक

मौन नहीं, अब शब्द कहेंगे

चीखें जो गूंजें सन्नाटे में,
सत्ता है मौन, बंद दरवाज़े, कागज़ के घर
में।
धर्मस्थल हो या वीरान राह,
हर कोना पूछे — कब मिलेगा न्याय का
साथ?
कागज़ की फाइलें पहाड़ों-सी बढ़तीं,
इंसाफ़ की राहें हर मोड़ पर सड़तीं।
कागज़ों में लिपटी विवशता की पुकार,
कानून कहे — “इंतज़ार, इंतज़ार!”
वर्षों बीते, निर्णय का न स्वर,
सूखी आंखों में भीगता है अंतर्मन हर
अवसर।
नाम गुमनाम, पर पीड़ा वही,
हर कोने में गूंजे — “अब तो कुछ हो
सही!”
धरती की छाती पर जो बोता है अन्न,
वही आज झुककर माँगता है अपनापन।
किसान जो था जीवन की लय,
अब ठगा-सा, चुप, खो बैठा भय।
फसलें उगाई, पसीना बहाया,
फिर भी हर दिन खुद को ही छल पाया।
नीतियां बनतीं वातानुकूलित छाँव में,
वो झुलसता रहा तपती धूप की नाव में।
जिन हाथों से भरते हो घर के भंडार,
उनके आंगन में सूना चूल्हा हर बार।

युवा जो था भविष्य की आंखों का तारा,
अब भटका हुआ एक आंकड़ा बेचारा।
घोषणाएं हों, विज्ञापन चमकें,
पर परीक्षाएं पेपर लीक में सिमटें।
फॉर्म भरे, फीस चुकाई,
पर परिणाम आया — सिर्फ मायूसी आई।
हर तारीख में झूठा दिलासा,
हर घोषणा एक छलावा, एक तमाशा।
आंखों में धुंध, मन में संशय,
प्रशासन की चुप्पी अब लगता है भय।
अब कलम को तलवार बनाना होगा,
सच को शब्दों में सजाना होगा।
चलो अब कलम से शंख बजाएं,
अन्याय के विरुद्ध स्वर उठाएं।
जहाँ भी हो सन्नाटा, वहाँ बोल बनें,
कर्तव्य के दीप से अंधकार को जलाएं।
संवेदना से नहीं, अब संकल्प से काम
होगा,
मौन नहीं, बदलाव का उद्घोष आम होगा।



श्री कुमार अनुकूल, स.ले.प.अ.

रात, दिन और वो

रात रोती रही, शबनम सोती रही,
सूरज चलता रहा, दिन दहकता रहा,
रेत जलते रहे, नीर उबलते रहे,
बात-ही-बात में, दिवा के गर्भ में,
रात शामिल हुई, फिर पनपने लगी।
वो जनमने लगी, सूरज सोने चला,
किरणें जाने लगीं, दिन भी ढलने लगा,
ऊष्मा उड़ने लगी, चांद चमकने लगा,
तारे तकने लगे, जुगनू फिरने लगे,
शाम शीतल हुई, वन वीराना हुआ।
गांव सोने लगे, शहरें दुल्हन बनी,
रात कामुक हुई, मन मचलने लगा,
जिस्म जलने लगा, हुस्न हँसने लगी,
इश्क बेताब था, दिल तड़पने लगा,
नशा इश्क का, सबपे छाने लगा,
नींद ओझल हुई, रात रोने लगी,
रात रोती रही, शबनम सोती रही,
शमा जलती रही, मन मचलता रहा,
इश्क जलता रहा, हुस्न हँसती रही,
नहीं पास आई, बुलाता रहा,
गई रात बीत, वो तड़पता रहा।
रात हँसने लगी, शमा बुझने लगी,
भौंरे गाने लगे, गुनगुनाने लगे,
कलियां खिलने लगी, खुशबू छाने लगी,
इश्क जाने लगा, हुस्न रोने लगी,
वो रोती रही, सिसकती रही,
नहीं आया इश्क, वो बुलाती रही,
इश्क ओझल हुआ, वो तड़पती रही।

रात के गर्भ में, दिन बढ़ता रहा,
दिन को जन्म दे, रात सोने चली,
तारे ओझल हुए, जग जगमग हुआ,
शबनम सोती रही, किरणें छूती रहीं,
लोग घूरने लगे, वो शरमाने लगी,
रात की स्याह चादर, थी नहीं उसके ऊपर,
बिना वस्त्र के थी, वो लेटी जमीं पर,
देख दुनिया को, शर्म से, वो हुई पानी –
पानी,
किरणों की आगोश में, खो गई वो,
उड़ी आसमां में, ओझल हुई वो,
धर रूप बादल का, लगी मण्डराने,
हवाओं की बाहों, में डाल बाहें,
पर्वतों के सिर पर, लगी नाचने वो,
नाचते – नाचते, वो समतल में आई,
नखरे दिखाते, दिन को रात करते,
बिजली गिराते, धरा को भिगोते,
निखारते, कलियों को, पेड़ों को नहलाते,
सींचते बागों को, कलियों को खिलाते,
नामों – निशां, वो अपना मिटाते,
हो गई गायब वो, मौसम को बदल के।
नीला चादर लपेटे, सूरज फिर आया,
रंगों का जादू, जमीं पर बिछाया,
लगे खेलने, उसपर जीव सारे,
ले क्रोध की काया, ममता की माया,
हुस्न और इश्क, दोनों लड़ने लगे,
लड़ते – लड़ते, वे प्यार करने लगे,
खो गए प्यार में, वो बेफिक्र होकर,

शाम ढलने लगी, रात होने लगी,
बात-ही-बात में बात होने लगी,
शमा जलने लगी, रात चढ़ने लगी,
हुस्न और इश्क, दोनों लगे खेलने,
खेल कर खत्म अपना, वो सोने लगे,
वो सोते रहे, शमा जलती रही,
शमा बुझने लगी, रैन रोने लगी,
रैन रोती रही, शबनम सोती रही,
सपने सुहाने, पनपने लगे,
रैन ने दिन को जन्म, फिर से दिया,
नींद आँखों में आई, ओझल हुई,

हुस्न और इश्क, दोनों अलग हो गए,
किरणों से दोनों लिपटने लगे,
बदन गर्म करके चहकने लगे,
शाम छाई गगन में, बहकने लगे,
रिवाज रोज का पूरा होने लगा,
कोई हँसने लगा, कोई रोने लगा,
कोई जीने लगा, कोई मरने लगा।
रात रोती रही, शबनम सोती रही।



श्री श्री नागेश, व.ले.प.अ.

ईश्वर का दूसरा रूप

खुदा हर जगह खुद नहीं आ सका,
इसलिए उसने माँ को बनाया है।
जलते हुए रेगिस्तान में भी,
ठंडी छाँव का पहरा बिठाया है।

लफ़्ज़ कहाँ से लाऊँ मैं इतने,
जो उसकी ममता को बयान करें।
वो पत्थर भी मोम हो जाता है,
जब माँ बच्चों के लिए दुआ करे।

सबसे पहला जो नाम लिया,
वो नाम जुबान पर माँ का था।
जब दुनिया ने ठुकराया हमको,
बस एक सहारा माँ का था।

खुद गीले में वो सोती थी,
हमको सूखे में सुलाती थी।
हमारी एक हँसी के खातिर,
वो अपना हर दर्द भूलाती थी।

जब बुखार में हम तपते थे,
रात भर वो जागा करती थी।
ठंडी पट्टी माथे पर रख,
मिनटों में घबराया करती थी।

घर में सबसे पहले उठना,
और सबसे आखिर में सोना।
बिना तनख्वाह के सदियों से,
काम करे और कभी न रोना।

अपनी थाली की रोटी भी,
वो हमको खिला दिया करती है।
"भूख नहीं है आज मुझे",
कहकर मुस्कुराया करती है।

दुनिया की नज़रों से बचाने को,
काला टीका वो लगाती है।
मेरी राहों के काँटे चुनकर,
फूल वहाँ वो बिछाती है।

गलती करने पर डाँट भी देती,
फिर छुपकर आँसू बहाती है।
थोड़ी देर में गले लगाकर,
प्यार से खाना खिलाती है।

बिना कहे जो बात समझ ले,
ऐसी वो अंतर्धामी है।
जिसके चरणों में जन्नत है,
वो रिश्ता बड़ा रूहानी है।

जब चोट हमें लग जाती थी,
दर्द उसे ही होता था।
हमारी आँख में आँसू देखकर,
दिल उसका ही रोता था।

बड़े हुए तो घर छोड़ चले,
सपनों की दुनिया पाने को।
पर माँ दरवाज़े पर बैठी थी,
वापस हमें बुलाने को।

परदेस में जब हम थक जाते,
माँ की लोरी याद आती है।
वो आँचल की ठंडी छाँव,
दिल को बहुत सताती है।

दुनिया पूछेगी कितना कमाया?
रुतबा तेरा अब क्या है?
बस माँ ही फ़ोन पर पूछेगी,
"बेटा, तूने खाना खाया है?"

झुरियाँ पड़ गई चेहरे पर,
पर प्यार वही पुराना है।
माँ के हाथ का बना वो खाना,
आज भी सबसे सुहाना है।

हम दुनिया की भीड़ में खोकर,
शायद उसे भुला देते हैं।
पर वो हर पल की दुआओं में,
हमें ही सदा रखती है।

उसके कर्ज को चुका सकूँ मैं,
इतनी मेरी औकात नहीं।
माँ से बड़ा कोई योद्धा नहीं,
और माँ से बड़ी कोई सौगात नहीं।

मंदिर-मस्जिद घूम लिया सब,
पर वो सुकून न पाया है।
जो सुकून माँ की गोद माँ की गोद में सिर
रख,
मैंने हर पल पाया है।

दोस्तों, कभी न रुलाना उसको,
जिसने तुम्हें हँसना सिखाया है।
उस खुदा का शुक्र करो जिसने,
तुम्हें माँ के साये से मिलाया है।

जब तक माँ का हाथ है सर पर,
हर मुश्किल आसान लगेगी।
जिस दिन वो चली गई दुनिया से,
ये दुनिया वीरान लगेगी।

ईश्वर का दूसरा रूप है

माँ

श्री भूपेंद्र मीणा, स.ले.प.अ.

नारी: अबला या सबला

बरसात की हल्की-फुल्की फुहारें पड़ रही थीं। गाँव के चौपाल पर लोग इक्कठा थे और चर्चा का विषय था – “लड़कियों को पढ़ाने का क्या ही फायदा, पढ़ लिख कर वो क्या ही कर लेंगी, कौन सी कोई बड़ी अफसर बन जाएंगी? है तो लड़की ही न और लड़कियों को तो आखिर में घर ही संभालना है, चूल्हा चोका ही तो करना है, फिर उनको पढ़ाने लिखाने का क्या ही फायदा, क्यूँ उन पर बेवजह का समय नष्ट करना, पैसा खर्च करना, मेहनत कर के सब व्यर्थ करना। घर रहेंगी तो घर का काम सीखेंगी और आगे ससुराल में भी वही काम आएगा, यह पढ़ाई लिखाई क्या ही काम आएगी ससुराल में।”

इसी भीड़ में एक लड़की भी थी नैना। जिसके पिता एक छोटे से किसान थे और उसके खुद के पिता घर की आर्थिक तंगी के कारण कहीं-न-कहीं यही चाहते थे कि नैना की पढ़ाई बंद कर दी जाए और अब उसकी शादी कर दी जाए।

गाँव के लोगों की यह सब बातें नैना बड़े ध्यान से सुन रही थी। मन ही मन वह लोगों की इन बातों से बिल्कुल भी सहमत नहीं थी, उसे लग रहा था कि यह सब लोग कैसी अजीब सी और बेकार सी बातें कर रहे हैं और क्यूँ वो लड़कियों को पढ़ाने के इतना खिलाफ है।

क्यूँ लोग लड़कियों को पढ़ाने से बचते हैं, और बस उनकी शादी करा कर उनसे छुटकारा पा लेना चाहते हैं, क्यूँ उन्हें आगे बढ़ने का मौका नहीं देना चाहते, क्यूँ उन्हें शादी के खूँटे से बांध देना चाहते हैं।

जहां यह सब लोग लड़कियों को बोझ समझते हैं, उनसे अपना छुटकारा पा लेना चाहते हैं, उन्हें आगे बढ़ने का मौका तक नहीं देना चाहते हैं, ऐसे में क्या कोई उसकी बोली किसी भी बात को सुनेगा, क्या उसे इन लोगों के बीच कुछ बोलना चाहिए।

इसी कशमकश को तोड़ते हुए आखिरकार नैना ने हिम्मत जुटाई और बोली, “अगर बेटियों को मौका ही नहीं दोगे, तो वह अपनी क्षमता, अपनी प्रतिभा को कैसे साबित करेंगी? क्या सिर्फ बेटे ही परिवार का नाम रोशन कर सकते हैं, बेटियाँ नहीं? क्या सिर्फ बेटों से ही परिवार की पहचान हो सकती है, बेटियों से नहीं? क्या सिर्फ बेटे ही सब कुछ होते हैं, बेटियाँ कुछ नहीं होती?”

भीड़ में खड़े सब लोग मुस्कुरा दिये, जैसे नैना ने कोई बात न कही हो बल्कि कोई मज़ाक किया हो, जिस पर सबको हंसी आ रही हो।

किसी ने हँसते हुए कहा, बड़ी बड़ी बातें करती है, तो किसी ने कहा अभी बच्ची है, तो किसी ने कहा अभी दुनियाँ नहीं देखी न इसने, इसीलिए यह सब बातें बोल रही है।”

नैना ने भी उसके आगे फिर भीड़ में खड़े उन लोगो से कुछ नहीं कहना ही सही समझा, शायद उसे समझ आ गया था कि यह लोग उसकी कोई बात नहीं समझेंगे अभी।

उस समय तो वह चुप हो गयी पर मन ही मन उसे भीड़ में खड़े लोगों की बातें, लड़कियों के प्रति उनका बर्ताव, लड़कियों के लिए उनकी छोटी मानसिकता जैसे नैना को प्रेरित करने लगी कि वह कुछ ऐसा करें जिस से इन लोगों की सोच को, उनकी मानसिकता को वो बदल दें।

नैना ने मन ही मन यह सोच लिया की वो ऐसा कुछ जरूर करेगी जिस से न केवल यह भीड़ ही, बल्कि पूरा गाँव उसकी मिसाल दे, और लड़कियों के प्रति अपना बर्ताव, अपना दृष्टिकोण, अपनी छोटी सोच सब बदल दें।

उस दिन के बाद से नैना ने और मेहनत से अपनी पढ़ाई की, पढ़ाई के लिए उसने अपना दिन रात एक कर दिया। जहां दिन में वह अपने पिता के साथ खेतों में पिता का हाथ बँटाती, तो वही रात को लालटेन की रोशनी में अपनी पढ़ाई भी करती। दिन भर घर के काम, पिता के साथ खेतों के काम के बाद जब शरीर थकने लगता, आंखें थकान के कारण बंद होने लगती तब भी वह न रुकती और न ही पढ़ाई को लेकर, कुछ कर दिखाने का उसका जज़्बा।

अपने सपनों की रोशनी को उसने कभी मंद नहीं होने दिया।

आखिरकार उसकी मेहनत रंग लाई और कुछ वर्षों बाद उसने कठिन प्रतियोगी परीक्षा पास की और जिला प्रशासन में अधिकारी बन गई।

एक वक़्त था जब नैना के पिता आर्थिक तंगी के कारण उसकी पढ़ाई को बंद कर देना चाहते थे। गाँव के वह लोग जो लड़कियों की शादी करवा के छुटकारा पा लेना ही सही समझते थे, भीड़ के वह लोग जिन्होंने उस वक़्त नैना को बच्ची है, दुनिया नहीं देखी इसने, दुनियादारी से परे है, वगैरा-वगैरा कह कर उसकी बातों का मज़ाक बनाया था । जिस गाँव में कभी उसकी पढ़ाई पर सवाल उठते थे, वही लोग, वही भीड़, वही गाँव आज उसके सम्मान में समारोह आयोजित कर रहा था।

मंच पर गाँव के लोग आते ओर नैना के बारे में ढेर सारी बातें करते, उसकी तारीफें करते। ऐसे ही फिर गाँव के बुजुर्ग रामलाल मंच पर खड़े हुए और उन्होंने कहा, ”आज हमें अपनी सोच बदलनी होगी। हमने नारी को हमेशा अबला कहा, जबकि अवसर मिलने पर वही सबसे “सबला (Strong)” साबित होती है।”

गाँव के लोगों की लड़कियों के प्रति जो सोच, जो दृष्टिकोण नैना बदलना चाहती थी, बुजुर्ग रामलाल की मंच पर बोली गयी बातों को सुन के उसे लगा कि कही न कही वह अपने उस कार्य में सफल हुई है। इतने वर्षों की उसकी मेहनत बेकार नहीं हुई। लोगों की सोच में उसे फर्क दिखने लगा। मन ही मन इस बात से वह बहुत खुश थी।

बुजुर्ग रामलाल ने नैना को मंच पर आकर अपने इस संघर्ष, अपनी इस सफलता और लोगों को प्रेरित करने के लिए उसे, लोगों से बात करने के लिए बुलाया। नैना के मंच पर आते हुए लोग नैना नैना नाम के साथ चिल्लाने लगे और उसके मंच पर पहुँच कर भीड़ को संबोधित करते हुए, उसके नमस्कार बोलते ही सारा गाँव एक दम शांत हो गया, मानो सब उसे व उसकी आवाज को ही सुनना चाहते हों, जो इस समय गाँव वालों के लिए एक मिसाल बन गयी थी। नैना ने भी मुसकुराते हुए इसे स्वीकार किया और फिर बोलना शुरू किया।

सबसे पहले उसने अपने पिता को संबोधित करते हुए धन्यवाद दिया जो एक समय पर आर्थिक तंगी के कारण उसकी पढ़ाई को बंद करवा देना चाहते थे और चाहते थे की उसकी शादी करवा दी जाये, परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया बल्कि नैना की पढ़ाई को जारी रखा, जिस कारण वह अपनी पढ़ाई पूरी कर सकी व आज इस मुकाम पर पहुँच पाई।

फिर उसने गाँव की उस भीड़ का, गाँव के लोगों का धन्यवाद किया, जिनकी बातें सुनकर उसे लड़कियों के प्रति गाँव वालों की सोच बदलनी है ऐसा निश्चय किया।

उसने गाँव वालों को संबोधित करते हुए गाँव वालों से कहा कि “नारी न तो जन्म से अबला होती है और न ही केवल त्याग की प्रतिमूर्ति होती है, पर इस पुरुष प्रधान समाज ने नारी के प्रति यह दृष्टिकोण बना दिया है जबकि स्त्री को भी यदि पुरुषों के समान अच्छी शिक्षा मिले, कुछ कर दिखाने के समान अवसर मिले, तो वह भी परिवार, समाज और देश- तीनों को एक नई दिशा देने में सक्षम हैं, समर्थ है।”

इस देश में पुरुषों ने देश के लिए बहुत कुछ किया है पर केवल पुरुषों ने ही तो सब कुछ नहीं किया बल्कि स्त्रियों ने भी मोका मिलने पर देश का नाम रोशन किया है। हम उस देश के वासी हैं जहां रानी लक्ष्मीबाई ने अपने दम पर अंग्रेजों को लोहे के चने चबवा दिये थे। हम उस देश के वासी हैं जिसमें एक स्त्री ने देश की प्रधानमंत्री बनकर देश की कमान संभाली थी।

मुझे मेरे माता-पिता ने बहुत कठिनाइयां झेल कर भी अवसर दिया कुछ करने का तो आज मैं भी आप लोगो के सामने इस मुकाम पर पहुँच कर, कुछ ऐसी बन कर खड़ी हूँ, जिस से इस गाँव का नाम रोशन हुआ है। उसी तरह सिर्फ बेटा ही सोच कर बेटियों से उसकी शिक्षा का

अवसर मत छीनों, बल्कि बेटों के समान ही बेटियों को भी पूर्ण अवसर दो, क्या पता कल को आप में से ही किसी की बेटी, मुझ से भी आगे और किसी बड़े मुकाम पर खड़ी हो और पूरे देश में फिर इस गाँव का नाम रोशन करें। बेटियों को बेटों से कम न समझे बल्कि उन्हें भी बेटों की भांति समान अवसर दें और फिर देखें। तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा मैदान गूँज उठा। नैना के माता-पिता की आंखों में गर्व के आँसू थे।

उन्होंने अपनी बेटी का हाथ पकड़कर कहा, "आज तुमने सिर्फ हमारा ही नहीं, बल्कि पूरे गाँव का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया है। और जो लोग लड़कियों को सिर्फ बोझ समझते थे, वह क्या ही कर लेगी, लड़कियों की शादी करवा के छुटकारा पा लेना चाहिए जैसी सोच रखते थे, तुमने आज न केवल उनकी सोच को बदला है, बल्कि कहीं न कहीं भविष्य में लड़कियों को भी लड़कों के बराबर, समान अधिकार व अवसर दिया जाए ताकि वह भी खुद को साबित कर सकें, को प्रबलता प्रदान की है।

एक बार फिर पूरा मैदान तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। उस दिन के बाद गाँव में एक नया नियम बना की हर बेटे की पढ़ाई पूरी कराई जाएगी और बेटे व बेटी दोनों को समान समझा जाएगा तथा बिना किसी भेदभाव के बराबर अवसर दिया जाएगा।

धीरे-धीरे उसी गाँव से कई लड़कियां डॉक्टर बनीं तो कई इंजीनियर बनीं, कोई अध्यापिका बनी तो किसी ने और किसी प्रकार से गाँव का नाम रोशन किया।

गाँव पुरानी कुरीतियों को पीछे छोड़ आगे बढ़ता गया और गाँव की पहचान ही बदल गई। वैसे समाज के कई हिस्सों में, लोगों की सोच में नारी आज भी केवल भोग-विलास की ही वस्तु है, उसे पुरुषों के समान आज भी नहीं समझा जाता, जबकि एक प्रगतिशील देश के भविष्य के लिए यह कहना गलत नहीं होगा की स्त्री और पुरुष समाज रूपी रथ के वह दो पहिये हैं जिसका एक भी पहिया यदि कमजोर होगा तो प्रगति का सपना मात्र एक सपना ही रहेगा, जो कभी पूरा नहीं हो सकेगा। इसीलिए इस बात को हमेशा ध्यान में रखना होगा की पुरुष और स्त्री एक बराबर हैं, एक समान हैं और नारी केवल सम्मान की ही नहीं, अपितु समान अवसरों की भी अधिकारिणी है।

शिक्षा (Moral) नारी अबला नहीं अवसर मिलने पर सबला (Strong) बनती है। उसकी शक्ति को पहचानना और उसे समान अवसर देना ही एक प्रगतिशील समाज की पहचान है।

श्री ध्रुव रंगा, एम.टी.एस.

ज़िंदगी

कभी तो गुनगुना ज़िंदगी, कभी तो गुनगुना
माना वह कोयल-सा कंठ नहीं है
फिर भी ज़िंदगी, कभी तो गुनगुना।

कभी तो खिलखिला ज़िंदगी, कभी तो खिलखिला
माना वह बचपन की मधुर मुस्कान नहीं है
फिर भी ज़िंदगी, कभी तो खिलखिला।

कभी तो इठला ज़िंदगी, कभी तो इठला
माना वह यौवन की नज़ाकत नहीं है
फिर भी ज़िंदगी, कभी तो इठला।

कभी तो हो बेफ़िक्र ज़िंदगी, कभी तो हो बेफ़िक्र
माना वह माँ-बाप का साथ, हाथ नहीं है
फिर भी ज़िंदगी, कभी तो हो बेफ़िक्र।

कभी तो अठखेलियां कर ज़िंदगी, कभी तो अठखेलियां कर
माना वह भाई-बहन, दोस्तों का साथ नहीं है
फिर भी ज़िंदगी, कभी तो अठखेलियां कर।

कभी तो जीवंत कर, कभी तो जीवंत कर
उन कहानियों, कहावतों को मुझमें
जो नानियां, दादियां सुना कर चली गईं
कभी तो जीवंत कर, कभी तो जीवंत कर।



श्री वेद प्रकाश खत्री, व.ले.प.

परम संतोष

बहुत समय पहले हिमालय की तलहटी में एक महात्मा श्री. सदानंद नाम के संत रहते थे। वे अत्यंत विद्वान, सरल और संतोषी थे। उनका कोई स्थायी आश्रम नहीं था। वे गाँव-गाँव और नगर-नगर पैदल घूमकर लोगों को धर्म, सदाचार और संतोष का संदेश दिया करते थे। जहाँ रात हो जाती, वहाँ किसी पेड़ के नीचे विश्राम कर लेते। उनके लिए धन-दौलत से ज्यादा संतोष का महत्व था।

एक दिन वे सुनसान जंगल के रास्ते से गुजर रहे थे, उस समय वहाँ कोई नहीं था। चलते-चलते उनकी नजर रास्ते में चमकती हुई एक सोने की अशर्फी पर पड़ी। उन्होंने उसे उठाकर अपनी झोली में रख लिया और मन ही मन में सोचने लगे कि यह अशर्फी मेरी नहीं है। मैं इसे उस व्यक्ति को दूंगा जो कि वास्तव में सबसे ज्यादा गरीब होगा।

उस दिन के बाद महात्मा सदानंद कई राज्यों और गाँवों में घूमे। उन्होंने गरीब किसानों को देखा, मेहनत करने वाले मजदूरों को देखा, साधारण व्यापारियों को भी देखा। कई लोगों के पास धन कम था, लेकिन उनके चेहरे पर संतोष और मुस्कान थी। महात्मा ने सोचा कि जिसके मन में संतोष है, वह गरीब नहीं हो सकता, इसलिए उन्होंने वह सोने की अशर्फी किसी को भी नहीं दी।

कई महीनों बाद एक दिन वे विजयगढ़ राज्य में गए। वहाँ बड़ी हलचल हो रही थी। वहाँ के राजा अपनी सेना के साथ पड़ोसी राज्य पर आक्रमण करके उस पर कब्जा करने की तैयारी कर रहे थे और पूरा नगर युद्ध की तैयारी कर रहा था।

वहाँ महात्मा धीरे-धीरे उस राज्य के राजा के पास पहुँचे। उन्होंने वह सोने की अशर्फी अपनी झोली से निकाली और उस राजा की ओर उछाल कर फेंक दी।

राजा ने आश्चर्यचकित होकर उस महात्मा को देखा और क्रोधित होकर उनसे पूछा:- महात्मन आप तो कोई बड़े विद्वान महात्मा दिखाई पड़ते हो फिर भी आपने मेरे ऊपर ये सोने की अशर्फी उछाल कर इस तरह मेरी तरफ क्यों फेंकी? आपने मेरा ऐसा अपमान क्यों किया?

महात्मा सदानंद मुस्कुराए और शांत स्वर में बोले “राजन्! यह सोने की अशर्फी मुझे कई महीनों पहले जंगल में रास्ते पर पड़ी मिली थी, तो मैंने सोचा था कि इसे सबसे गरीब व्यक्ति को दूंगा। बहुत खोजने के पश्चात् आज मुझे आपमें वह गरीब व्यक्ति नजर आया”

राजा ने फिर से क्रोध में कहा, “मैं तो इस राज्य का राजा हूँ। मेरे खजाने सोने-चाँदी के भण्डार से भरपूर हैं और तुम मुझे गरीब समझ रहे हो?”

महात्मा ने उत्तर दिया, “जिसके पास इतना सारा धन, महल और वैभव हैं, फिर भी वह दूसरे राज्य के धन संपदा पर कब्जा करना चाहता है, तो उससे बड़ा मूर्ख और निर्धन व्यक्ति कौन हो सकता है?”

सच्चा धन तो संतोष है। जिसके मन में संतोष है, वही सच्चा अमीर है।

जिसके मन में संतोष नहीं, वह चाहे राजा ही क्यों ना हो, भीतर से वह गरीब ही है।

महात्मा की बात राजा के मन में तीर की तरह लग गई। उसने कुछ क्षण मौन रहकर भीतर ही भीतर सोचा तो उसे अपनी भूल का अहसास होने लगा और उसने तुरंत युद्ध विराम करने का फैसला किया।

उस दिन उस राजा ने प्रण लिया कि अब वह अपने स्वराज्य की समृद्धि के लिए युद्ध के बजाए मित्रता का रास्ता अपनाएगा और किसी और राज्य की संपत्ति हड़पने के लिए कभी भी अपनी और औरों की जान जोखिम में नहीं डालेगा। उसके इस निर्णय से हजारों सैनिकों का जीवन युद्ध में मरने से बच गया और जनता खुशहाल हो गई और दोनों राज्यों के बीच सुख-शांति की स्थापना हो गई।

अब महात्मा सदानंद खुश होकर अपनी यात्रा पर आगे बढ़ गए। अब उनके पास वे सोने की अशर्फी तो नहीं थी परन्तु उसके बदले उन्हें संतोष मिल चुका था। उनके संतोष रूपी धन ने एक राजा को भी गरीब से सच्चा भगवान बना दिया था।

“शिक्षा”

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि दूसरों के धन पर लालच करने वाला व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं रह सकता। सच्ची संपत्ति संतोष है जिससे जीवन में सदैव सुख और प्रसन्नता संभव है।



श्री वेद प्रकाश खत्री, व.ले.प.

हिंदी को अपनाना, अपनी विरासत को बचाना।

हिंदी: आत्मा की आवाज़

जब-जब मन की वीणा ने
भावों का संगीत रचा,
हिंदी ने हर शब्द में
जीवन का नव गीत रचा।

यह केवल बोली भर नहीं,
संस्कृति की मुस्कान है,
ऋषियों के चिंतन की धारा,
भारत की पहचान है।

माँ की लोरी की मधुर लय,
पिता के सपनों का विस्तार,
गुरु के ज्ञान का उज्ज्वल दीप,
जन-मन का अनुपम आधार।

कार्यालय की हर फाइल में
जब हिंदी का स्पर्श मिले,
शासन केवल नियम न होकर
जनसेवा का हर्ष मिले।

सरल शब्द जब सेतु बनें,
दूरी अपने आप मिटे,
भाषा का उद्देश्य तभी है,
हर मन से हर मन जुड़े।

हिंदी किसी से स्पर्धा नहीं,
सब भाषाओं का मान करे,
विविध रंग के इस उपवन में
अपनी मधुर पहचान धरे।

राजभाषा का गौरव केवल
उत्सव तक सीमित न रहे,
दैनिक कर्मों की धड़कन बन
हर कार्यालय में नित बहे।

जब हस्ताक्षर हिंदी में हों,
जब पत्रों में अपनापन हो,
हर निर्णय में लोकहित का
सरल, सहज आलोकन हो।

आओ ऐसा दीप जलाएँ,
जिसकी लौ विश्वास बने,
हिंदी केवल भाषा न रहे
कर्तव्य, संस्कृति, श्वास बने।

शब्द-शब्द में राष्ट्र बसे,
वाक्य-वाक्य में प्रेम खिले,
हिंदी के उजले आँगन से
भारत का भविष्य मिले।

आओ मिलकर आज प्रण लें
कर्म बने इसका सम्मान,
राजभाषा हिंदी के संग ही
उज्ज्वल हो हिंदुस्तान।



श्री रोहित तोमर, लेखापरीक्षक

माँ

पास नहीं पर दूर सही,
मुझको याद आती है माँ,
तेरी वो हर बात कही,
मुझको याद आती है माँ,
दिया है जीवन तूने मुझको,
तू ही तो भगवान है,
मेरी श्रद्धा पहले तुझको,
रूठे फिर चाहे रब सही,
तू कितनी याद आती है माँ,

सबसे पहले माँ को देखा,
सबसे पहले माँ था बोला,
सबसे पहले माँ है होती,
है माँ जैसा कोई और नहीं,
बहुत ही याद आती है माँ,
पास नहीं पर दूर सही,
मुझको याद आती है माँ,



ममता रस पिलाया उसने,
पहला कौर खिलाया उसने,
बन कर लहू जो आज दौड़ता,
ये दूध है उसका मेरा लहू नहीं,
इतना याद आती है माँ,
पास नहीं पर दूर सही,
मुझको याद आती है माँ,

गलती करने पर टोकना,
गलती करने से रोकना,
समझा हूँ अब जाके मईया,
वोह प्यार था तेरा डाँट नहीं,
बस तेरी याद आती है माँ,
पास नहीं पर दूर सही,
मुझको याद आती है माँ,
तेरी वो हर बात कही,
मुझको याद आती है माँ.....

श्री भूपेन्द्र भंडोरिया, स.ले.प.अ.

हिंदी का पतन, भारत का पतन है।

लेखापरीक्षकों के लिए योग और ध्यान

लेखापरीक्षा एक अत्यधिक मानसिक तनाव, लंबे कामकाजी घंटों और कड़ी समय-सीमा वाला कार्य है। लगातार डेटा विश्लेषण, वित्तीय विसंगतियों को खोजना और विनियामक दबावों के कारण लेखापरीक्षकों को मानसिक थकान और शारीरिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे में योग और ध्यान उनके लिए एक शक्तिशाली उपकरण साबित हो सकते हैं।

लेखापरीक्षकों के लिए योग के लाभ

शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार: लंबे समय तक डेस्क पर बैठने से पीठ, गर्दन और कंधों में दर्द होता है। 'मर्कटासन', 'भुजंगासन' और 'ताडासन' जैसे योग आसन रीढ़ की हड्डी को मजबूत करते हैं और मुद्रा में सुधार करते हैं।

मानसिक स्पष्टता: लेखापरीक्षा के लिए बारीक नजर और गहरी एकाग्रता की आवश्यकता होती है। योग मस्तिष्क में आक्सीजन के प्रवाह को बढ़ाता है, जिससे निर्णय लेने की क्षमता बेहतर होती है।

तनाव में कमी: योग शरीर में तनाव हार्मोन के स्तर को कम करता है, जिससे काम के भारी दबाव के बीच भी शांति बनी रहती है।

ध्यान का महत्व

एकाग्रता और फोकस: रोजाना 10-15 मिनट का ध्यान एकाग्रता को बढ़ाता है। यह लेखापरीक्षकों को वित्तीय विवरणों में छोटी से छोटी त्रुटियों को पकड़ने में मदद करता है।

भावनात्मक संतुलन: काम के दबाव और क्लाइंट्स के साथ बातचीत के दौरान शांत रहना जरूरी है। ध्यान भावनाओं को नियंत्रित करने और कार्यस्थल पर धैर्य बनाए रखने में मदद करता है।

बेहतर नींद: व्यस्त सीजन के दौरान लेखापरीक्षक अक्सर अनिद्रा का शिकार हो जाते हैं। ध्यान मस्तिष्क को शांत कर गहरी और आरामदायक नींद लाने में सहायक है।

काम के दौरान अपनाए जाने वाले त्वरित उपाय

चेयर योग: डेस्क पर बैठे-बैठे ही गर्दन को घुमाना, कंधों को स्ट्रेच करना और कलाई के व्यायाम करना।

प्राणायाम (अनुलोम-विलोम): काम के बीच में 5 मिनट का प्राणायाम मानसिक थकावट को तुरंत दूर करता है।

निष्कर्ष:

योग और ध्यान केवल शारीरिक व्यायाम नहीं हैं, बल्कि यह लेखापरीक्षक के लिए एक मानसिक रीसेट बटन की तरह हैं। उसे अपनी दिनचर्या में शामिल करके वे अपने कार्य प्रदर्शन को बढ़ा सकते हैं और एक स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

श्री राकेश, व.ले.प.

रंगमंच

ढोल बजा गुंजी किलकारी
रंगमंच में आज एक नई कहानी
एक था राजा एक थी रानी
क्या लगा आज भी होगी वही कहानी?

कलाकारों ने कुछ अलग करने की ठानी
कद में बड़ा उम्र में जवान
एक था जोकर कला से गुणवान
अकाल मृत्यु हुई पत्नी की
रह गई बिटिया नाबालिक सी
रंगमंच की सीमा सरकी

शहर से गांव में आके गाड़ी रुकी
बच्चों का दिल बहलाया
नाम जो खोया वापिस कमाया
बिटिया ने दिया सहारा



जोकर बनी हुनर के द्वारा
रंगमंच में ताली बजी
दिया बड़े व्यापारी ने सहारा
बाप बेटी ने जो कीर्ति कमाई
शहर बड़ा या छोटा क्या धूम मचाई
हर बार नया नाटक दिखाया
क्या बच्चा, बूढ़ो तक को हसाया
जोकर का किरदार बना इतिहास
हुनर के सामने व्यर्थ है हजार अभ्यास

अंत हुआ कहानी का मेरे बच्चों
बच्चे बोले कहानी ऐसे न रोको
पूछे की क्या थी ये घटना असली
जोकर अपनी बेटी को देखा और बोला
क्या पता कल्पना है कि असली !!

श्री बिपलब कुमार साहू, व.ले.प.अ.

हर भारतीय की शक्ति है हिंदी,
एक सहज अभिव्यक्ति है हिंदी।

त्योहारों का मिलन

देश हमारा अनेक में एक,
विभिन्नताओं से परिपूर्ण है इसके लोग।
भारत मां की धरती है निराली,
हर मौसम में छाई हरियाली, खुशहाली।
पर्व हैं सारे रंग-बिरंगे खुशियों से भरपूर,
इन्हे मनाते हम मिल-जुलकर।

दीपावली दीप जलाती है,
घर - आँगन को खूब सजाती है।
अंधियारा सब दूर भगाएँ,
प्रेम के दीप हृदय में जलाएँ।
ज्ञान का प्रकाश भरा रहे हरदम,
दीप जलाएं हम घर-घर।
रोशन हो जग का हर कोना-कोना,
मिटे तमस का बादल घना।

होली रंगों की बहार लाए,
हर चेहरे पर मुस्कान सजाए।
भेदभाव सब भूल के भाई,
सब रंगों को अपना लो भाई।
मिलकर खेलें रंगों की होली।
कहीं न हो भेदभावों की टोली।
रंगों की बहार छाए हरदम।
खुशियों लहर आए हरदम।

रक्षाबंधन प्यार बढ़ाता,
भाई-बहन का रिश्ता निभाता।
कलाई पर जब राखी सजती,
मन में खुशियों की कलियाँ खिलतीं।
रेशम की डोरी में बंधा,
भाई का बहन का प्यार।
राखी लेकर आई बहना,
सज गया आज संसार।

जन्माष्टमी जब आती है,
कृष्ण की लीला याद दिलाती है।
मटकी फूटे, गूँजे बधाई,
चारों ओर हो खुशियाँ छाई।
कान्हा का है रूप निराला,
घर-घर गूँजे मुरली वाला।
मुरली की सुन धुन मधुर,
मिट जाते पापी असुर।

गणेश चतुर्थी मंगल लाती,
रिद्धि-सिद्धि का संदेश सुनाती।
“गणपति बप्पा मोरया” गाएँ,
मन के सारे विघ्न भगाएँ।
कर दो जीवन से दुखों का नाश,
हमारे सब काम में कर दो रास।
एक तरफ मोह माया,
दूजी तरफ श्री गणेश आया।

नवरात्रि में माँ का गुणगान,
गूँज उठे हर घर-आँगन।
शक्ति, श्रद्धा मन में भरती,
माँ दुर्गा सबकी रक्षा करती।
हृदय हर्षित मन गर्वित,
नई उर्जा का संचार हो।
दुखियों का दुख दूर करने,
आती हो माँ तुम तमस को मिटाने।

ईद खुशी का पैगाम सुनाती,
भाईचारे की राह दिखाती।
सेवइयों की मिठास लिए,
दिल से दिल को पास बुलाती।
एकता भाईचारे का है यह त्यौहार,
लाता खुशियों की अनगिनत बौछार।

मिलजुलकर त्यौहार मनाएं सभी,
ना हो दिलों में दूरी कभी।
क्रिसमस खुशियों का पर्व है प्यारा,
प्रेम से जगमग हो जग सारा।
घंटी बजे और खुशियाँ आएँ,
सब मिलकर मंगल गीत सुनाएँ।
एक दूसरे से रहे सौहार्द,
ना रहे दिलों में कोई खटास।
जगमग जगमग करता क्रिसमस आए,
नया वर्ष संग में लाए।
गुरुपर्व ज्ञान का दीप जलाता,
सेवा और सच्चाई सिखाता।
गुरुओं का सम्मान करें हम,
प्रेम-करुणा से भरें ये जीवन।
सत्गुरु सन्मार्ग दिखाएं,
भुले भटके को राह दिखाएं।
मिटकर अज्ञान ज्ञान की राह पर चलना
सिखाएं।



बैसाखी खेतों में रंग सजाए,
मेहनत का सुंदर फल दिखाए।
किसानों के चेहरे मुस्काएँ,
ढोल बजें और गीत सुनाएँ।
भरें हो धन धान्य सब ओर,
कोई न हो भूख से कमजोर।
सबको मिले खुशी अपार,
सब करें तरक्की हजार।
त्योहार अनेक, संदेश एक,
प्रेम रहे हर दिल में नेक।
जाति-धर्म का भेद मिटाएँ,
मिलकर भारत को स्वर्ग बनाएँ।
भारत की यही पहचान- एकता,
प्रेम और सम्मान।
हर त्योहार यही समझाता,
मिल-जुलकर रहना हमें सिखाता।

श्रीमती नेहा तिवारी, क.अ.अ.

हिंदी से आसान दूसरी कोई भाषा नहीं है।

भारत देश का प्यारा झंडा, ऊँचा सदा रहेगा
ऊँचा सदा रहेगा झंडा, ऊँचा सदा रहेगा।



इस झंडे की शान की खातिर, वीरों ने प्राण
गँवाए,
जा बाज वह वीर बहादुर, लौट के घर न
आए,
उन वीरों के बलिदान से, हम सुख से सो
पाए,
भारत देश का प्यारा झंडा, ऊँचा सदा रहेगा,
ऊँचा सदा रहेगा झंडा, ऊँचा सदा रहेगा।

आओ सब मिल कर, इस झंडे को शीश
झुकाए,
इसकी शान बनी रहे, हम इस पर मर मिट
जाए
तभी तो देश हमारा, विश्व गुरु बनेगा
भारत देश का प्यारा झंडा, ऊँचा सदा रहेगा,
ऊँचा सदा रहेगा झंडा, ऊँचा सदा रहेगा।

केसरिया बल भरने वाला, सफेद रंग सच्चाई,
हरा रंग है, हरी हमारी धरती की अंगड़ाई,
और चक्र कहता है, प्रतिपल आगे कदम
बढ़ेगा,
भारत देश का प्यारा झंडा, ऊँचा सदा रहेगा,
ऊँचा सदा रहेगा झंडा, ऊँचा सदा रहेगा।

इस झंडे को लेकर जब चन्द्रयान, चन्द्र लोक
में जाए,
भारत की प्रभुता को, पूरे विश्व में फैलाए,
वैज्ञानिकों की मेहनत से, भारत का गौरव
बढ़ाए,
भारत देश का प्यारा झंडा, ऊँचा सदा रहेगा,
ऊँचा सदा रहेगा झंडा, ऊँचा सदा रहेगा।

श्रीमती मंजू मल्होत्रा, व.ले.प.अ.

सेवानिवृत्ति

कार्यालय के निम्नांकित सहकर्मी उनके नाम के सामने अंकित तिथियों को सेवानिवृत्ति एवं स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति प्राप्त कर चुके हैं। सूर्यसुता परिवार सभी सेवानिवृत्त एवं स्वैच्छिक सेवानिवृत्त सहकर्मियों को स्वस्थ दीर्घायु एवं क्रियाशील जीवन की शुभकामनाएं देता है।

सेवानिवृत्त एवं स्वैच्छिक सेवानिवृत्त कर्मियों की सूची

1.	श्री अशोक कुमार सहाय, पर्यवेक्षक	सेवानिवृत्ति	31.12.2025
2.	श्री रतनीश महाजन, व.ले.प.अ.	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति	10.02.2026
3.	श्री के.एस मुहम्मद रफी, उप-महालेखाकार	सेवानिवृत्ति	30.04.2026
4.	श्री एस. धनराजन, सहायक निदेशक	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति	24.05.2026
5.	श्री नवीन चुघ, व.ले.प.अ.	सेवानिवृत्ति	30.06.2026
6.	श्री बी. श्रीकांत, व.ले.प.अ.	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति	03.07.2026
7.	श्रीमती सीमा सिंघल, पर्यवेक्षक	सेवानिवृत्ति	31.08.2026

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2026-27 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	‘क’ क्षेत्र	‘ख’ क्षेत्र	‘ग’ क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1 ‘क’ क्षेत्र से ‘क’ क्षेत्र को 100% 2 ‘क’ क्षेत्र से ‘ख’ क्षेत्र को 100% 3 ‘क’ क्षेत्र से ‘ग’ क्षेत्र को 70% 4 ‘क’ क्षेत्र से ‘क’ व ‘ख’ क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 100%	1 ‘ख’ क्षेत्र से ‘क’ क्षेत्र को 90% 2 ‘ख’ क्षेत्र से ‘ख’ क्षेत्र को 90% 3 ‘ख’ क्षेत्र से ‘ग’ क्षेत्र को 60% 4 ‘ख’ क्षेत्र से ‘क’ व ‘ख’ क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1 ‘ग’ क्षेत्र से ‘क’ क्षेत्र को 60% 2 ‘ग’ क्षेत्र से ‘ख’ क्षेत्र को 60% 3 ‘ग’ क्षेत्र से ‘ग’ क्षेत्र को 60% 4 ‘ग’ क्षेत्र से ‘क’ व ‘ख’ क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 60%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%



13.	i मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	ii मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
	iii विदेश में स्थित केन्द्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 2 बैठकें		
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	45%	35%	25%
		(न्यूनतम अनुभाग)		
		सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, “क” क्षेत्र में कुल कार्य का 45% “ख” क्षेत्र में 30% और “ग” क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए।		



The background of the image is a stylized representation of the Indian national flag, featuring horizontal stripes of saffron, white, and green, separated by thin blue lines. The colors are rendered with a painterly, brushstroke effect, giving it a textured appearance. In the center of the white stripe is a blue Ashoka Chakra, a 24-spoke wheel. Overlaid on this background is the text 'हिंदी का मान,' in a bold, black, sans-serif font.

हिंदी का मान,

भारत का

सम्मान।